माँगपारि वेनी रचि गूंथी निजकर नंदकी नारीजी ॥ २ ॥
दोहा–गोरे मुख वेंदीदई, सो छवि कहिय नजाय ॥
सारी सुरंग निकारिनई, अपने हाथउठाय ॥
चौबोला–अपने हाथ उठाय चामरितिल मेवा बतासेल्याईजी॥
कुँवरि गोद भरि विनये देवा जोरी विधिहिबनाईजी ॥
कह्यो कान्हसँग खेलहु जाई सुनिराधा हरषाईजी ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी प्यारी खेलत आंगनमांईजी ॥ १ ॥
छविसिंधू दोउ परमअगाधा नंद अवास सुहावैजी ॥
देखरूपकोटिकमदन रति घनदामिनहु लजावैजी ॥
यशुमति दंपति रूपनिहारी आनँद उर नसमावैजी ॥
जो अभिलाषा मनमें आई सोइ भाव दरशावैजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत दोउ झगरनलगे, भरे परम अहलाद ॥
मानहुँ घन अरु दामिनी, करत परस्पर वाद ॥
चौबोला–करतपरस्परवाद अमितछविअमित वचनरसछाईजी
युगलकिसोर विहार देख मन यशुमति अति हरषाईजी ॥
जात महरि सों कहि सुकुमारी अपने सदन सिधाईजी ॥
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई खेल्यो करि नित आईजी ॥१॥
बोल उठे मोहन सुन राधा कत सकुचाति मन माईजी ॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं जननी सों सकुचाईजी ॥
तोहिं देखि मैया सुख पावै कितो करि छोह बुलाईजी ॥
सुनि मोहनके वचन सयानी चितै रही मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–विहँसि चली वृषभानुजा, हरि मूरतिउरराखि ॥
कहां हुतीरी राधिका, बूझति जननी भाखि ॥
चौबोला–बूझति जननी भाखि मांगकिन बेनीगूंथबनाईजी ॥
वेंदी भाल लाल किन दीनी किन तेरी गोदभराईजी ॥

खेलत रही नंदके द्वारे यशुमति मोहिं बुलाईजी ॥
जब तहां जाय निकट मैं बैठी तब मोहिं लखि हरषाईजी॥ १ ॥
बूझौनाम तेरो बाबाको मेरो बूझ सुखपाईजी ॥
मोहिंचितै पुनि सुतहि निहारी बिनती प्रभुहि सुनाईजी ॥
मेरे शिर वेनी गुहि दीनी वेंदी लाल लगाईजी ॥
सारीनई मँगाय यशोदा अपने कर पहराईजी ॥ २ ॥
दोहा—विधना सों विनती करी, तिलचामरि दे गोद ॥
तोहिं विहँसिगारीदई, उरकरिके अतिमोद ॥
चौवोला—उर करिकै अति मोदकह्योतोहिंहरषि नंदकीनारीजी॥
वह जैसी तैसी मैं जानी कह्यो अधिक छिनारीजी ॥
तोहिंनामधरि कह्यो बबाको वृषभानुहि दूतारीजी ॥
जबमैं कह्यो ठग्यो कबु तुमहूं तबमोहिंहँसि उरधारीजी ॥ १ ॥
सुनि कीरति राधाकी बातैं भोरी शिशूलखाईजी ॥
बेटी दाँव आपनो लीनो नीक ज्वाबदे आईजी ॥
जो कछुमोहिंकहचो नँदघरनी सो वह करत सदाईजी ॥
हँसि हँसिकीराति कहत सुभाई मनमें अति सुखपाईजी ॥ २ ॥
दोहा—फेरि फेरि यशुदा वचन, बूझति शिशुते माय ॥
सुनि बरसाने की त्रिया, यशुदहिगारी गाय ॥
चौबोला—यशुदहिगारी गाय सुनी बातें कीरति मुसुकाईजी ॥
नंदरानीके जियकी जानी चाहति करन सगाईजी ॥
मेरी सुता विमल चपलासी मेघ श्याम सुतताईजी ॥
बाढ्यो उर आनंद हुलासा कीरति पति ढिग आईजी ॥ १ ॥
समुझिगई कीरति पति पासा आनँद उर नसमावैजी ॥
बातें सब परगट करदीनी प्रीत कि रीत जनावैजी ॥
भये दोऊ आनंद मगन अति सो सुख कहत न आवैजी ॥

नित्य दूलह श्याम श्यामा चारं वेद यशगावैजी ॥ २ ॥
दोहा–युगल किसोर स्वरूप धर, वृन्दावन रसखान ॥
नवदुलहिन दूलहसदा, राधा श्याम सुजान ॥
चौबोला–राधा श्याम सुजान वृंदावन दूलह दुलहिन चारैजी॥
गावत नित्य विहार शेष शिव ब्रह्मा पार न पारैजी ॥
कहत यशोमति सों हरि प्यारे रहत खिलौना डारैजी ॥
राधा जिन लैजाय चुराई आवत सांझ सवारैजी ॥ १ ॥
चितै रहति मुरलीकी घाईं मेरो प्राण ता माईजी ॥
तेरे भाये नेक नमाता राखहि वेग उठाईजी ॥
बलहूको पतियाव न माई भीतर राखि छिपाईजी ॥
कहति मात हँसि लालन मेरे कोले जाय चुराईजी ॥ २ ॥
दोहा–नेक नामताको सुनो, ब्रज ते बासनशाय ॥
बिन देखेका सोकहै, लेसो कौन बताय ॥
चौबोला–ले सो कौन बताय आवतही राधाई लेजावैजी ॥
फिर तू री पाछे पछितैहै सो फिर नाहिं बतावैजी ॥
मांगो तब पुनि देहि निकारी अब किन वेगं उठावैजी ॥
जननी हरिकी बतियां भोरी सुनि सुनि मन सुख पावैजी॥ १ ॥
बिरुझाने नहिं मानत मोहन जानति यशुमत माईजी ॥
महरि खिलौना जानि हरीके राखे तुरत उठाईजी ॥
भौंरा चकई और मुरलिया गेंद बटा सबल्याईजी ॥
विहारन प्रभुके अमित खिलौना नाम कहे नहिं जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहति यशोमति श्याम सों, पियहु दूध कछुआय ॥
आज प्रात गैया दुही, सोइ दूध प्यामाय ॥
चौबोला–सोइ दूध प्यामाय और मोहिं नेकहु नाहिं सुहाईजी ॥

१ ऋग, यजु, साम, अथर्वण। २ शीघ्र।

जो तू कोटि यत्न करि प्यावे नहिं पीवतमैं राईजी ॥
यह धोरीको दूध कन्हाई मात सौंह करि ल्याईजी ॥
तुमते और कौन मोंहि प्यारो राख्यो निज औटाईजी ॥ १ ॥
तातो जानि वदन नहिं लावे फूंकि फूंकि पय प्यावेजी ॥
पय पीवत मोहन अलसाने तब जननी पौढावेजी ॥
उठहु लाल तुम्हरी बलिजाऊं प्रातहि मात जगावेजी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे संगके ग्वाल बुलावेजी ॥ २ ॥

दोहा—हरहु प्यास लोचन हरी, अपनो वदन दिखाय ॥
करहु कलेऊ भ्रात दोउ, पुनि खेलो तुम जाय ॥

चौबोला—पुनि खेलो तुम जाय लेहु अरु जो तुमरी रुचि आईजी
सखा वृंद सब लेहु बुलाई जागहु कुँवर कन्हाईजी ॥
तब हँसि चितये सेजते मोहन उठे श्याम सुखदाईजी ॥
यशुमति जलझारी भरल्याई धोयो मुख निज माईजी ॥ १ ॥
द्वारेते सब सखा बुलाये देखि दरश सुख पायेजी ॥
कियो कलेऊ कछु दोउभाई अरु सब सखा जिमायेजी ॥
गैयन लै बन चले गुवाला मोहन संग सुहायेजी ॥
घर घरके बछरन लै आये चले बनहिं समुहायेजी ॥

दोहा—चलहु श्याम वृन्दाविपिन, कहत सखा समुदाय ॥
वंसीवट यमुना निकट, खेलैंगे तहां जाय ॥

चौबोला—खेलैंगे तहां जाय भली कहि हँसि बोले सुखदाईजी ॥
कोउ टेरत कोउ घेरत धाई शृंगी वेणु बजाईजी ॥
कोउ सुरभी गण गोर चलावत कोउ मिल हेरी गाईजी ॥
हेरी टेर सुनत कह्यो मोहन मोहिंको देहु सिखाईजी ॥ १ ॥
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई हँसे सकल नहिं आईजी ॥
अब कै लेहु फेर नाहिं आवै तब हँसियो सब भाईजी ॥

गावत खेलत हँसत चले सब सखा वृंद छबि छाईजी ॥
पहुंचे सब वृन्दावन जाई सखन सहित सुखदाईजी ॥२॥

अथ अघासुरवध लीला।

दोहा—दीन बंधु दुष्टन दलन, हरि त्रिभुवनकेराइ ॥
सर्व अंग सुन्दर सुखद, फिरत चरावत गाय ॥

चौबोला—फिरत चरावत गाय तहां अघ आयो गर्व बढाईजी ॥
कंसराय करि कोप पठायो प्रेरित काल नियराईजी ॥
ताके एक बहन द्वै भैया मारे प्रथम कन्हाईजी ॥
एक पूतना जो ब्रजआई बत्सासुर बकभाईजी ॥ १ ॥
तिनको वैर असुर उर धरिकै यह मनमाहिं विचारीजी ॥
आज राजको कारज कीजे भैयन वैर समारीजी ॥
गिरि समान अजगर तनुकीनो बैठ्यो वदन पसारीजी ॥
वन घन नदी रची मुखमाहीं माया कृत अति भारीजी ॥ २ ॥

दोहा—वाही मग निकसे हरी, गाय बच्छ सब ग्वाल ॥
कपट रूप यह असुरहै, जान लियो नँदलाल ॥

चौबोला—जानलियो नँदलाल याहिमैं तुरतहि आज नशाईजी॥
असुर मार भूभार उतारों मन मन कहत कन्हाईजी ॥
ग्वालन अहि पर्वत करि जान्यों वदन कंदरापाईजी ॥
गाय बच्छ पैठे सब धाई देखत तृण हरियाईजी ॥ १ ॥
गाय बच्छ ग्वालन सहित सब तामुख गये समाईजी ॥
कहत परस्पर आज बनहिं में सुरभी चरहिं अघाईजी ॥
असुर सकोरच्यो वदन तबहिं सब आयगये मुखमाईजी ॥
मानो घन घेरी निशा तहां अंधकार गयो छाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अति अकुलाने सकल तब, गाय बच्छ सब ग्वाल ॥
कहत परे कित आय हम, त्राहि त्राहि नँदलाल ॥

चौबोला—त्राहि त्राहि नँदलाल हमारे प्राण गये इहिवारीजी ॥
तुम बिन कौन उबारन हारा लीजे खबर हमारीजी ॥
श्रवण सुनत हरि आतुर वाणी तब चिंता उर धारीजी ॥
पैठे आप अघा मुख जाई भक्तनके दुखहारीजी ॥ १ ॥
अघा असुर उर अति हरषाई लीने होठ मिलाईजी ॥
विद्याधर मुनिवर गंधर्वा भये सोच मन माईजी ॥
अविगत गति भक्तन हितकारी तब इक बुद्धि उपाईजी ॥
मुखते देह दुगुण धरि ताके रूंधे श्वास कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सक्यो न असुर सँभारि तब, अतिशय करी पुकार ॥
फूट गयो शिरताहि मग, निकसि ज्योति उजियार ॥

चौ०-निकसि ज्योति उजियार ज्योति सोई स्वर्गलोकको धाईजी॥
बहुरि व ज्योति स्वर्ग ते आई हरिके माहिं समाईजी ॥
अघ मुखते निकरे बाहिर तब सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
कहत सखन आवहु निकसि सब मैं कर लेहुँसहाईजी ॥ १ ॥
गाय बच्छ व्याकुल भये भारी अति डरपे सब ग्वालाजी ॥
जहां तहां हरषे वचन सुनतही मिट्यो तिमिर तिहिं कालाजी॥
बच्छ सहित बाहर सब आये देखे श्याम दयालाजी ॥
हम अज्ञान वृथाभय पावत सहाय हमाहिं नँदलालाजी ॥ २ ॥

दोहा—धन्य कान्ह धनि मात पितु, जिन जाये तुम लाल ॥
गिरि समान मार्‌यो असुर, हौ असुरनके काल ॥

चौबोला-हौ असुरनके काल सुनत कह्यो तुम सब करी सहाईजी
तब मैं मार्‌यो असुर अन्याई हँसि हँसि कहत कन्हाईजी ॥
जो तुम मेरे संग न होते मरतो मोसों नाईजी ॥
देखि अघासुर वध सुरजानी हर्षि सुमन झरि लाईजी ॥ १ ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा गावत गुण हरषाईजी ॥

अघा असुरकी करत बड़ाई हरि माधि ज्योति समाईजी ॥
करत अनेक यत्न मुनि ज्ञानी अंतकाल हरि पाईजी ॥
सो हरि अंतकाल जगपावन बसे अघामुख माईजी ॥ २ ॥

दोहा–जै जै जै प्रभु जगतहित, जगत्राता जगदीश ॥
जाको मारणहूं प्रगट, तारन विश्वावीस ॥

चौबोला–तारन विश्वावीस जैजैकहि हरषि सुमन बरषावैजी॥
अति आनँद निरखत हरि मूरति ग्वाल गाय सुखपावैजी ॥
तबहिं सखनसों विहँसि कन्हाई ऐसे वचन सुनावैजी ॥
चलहु सकल वंसीबट तहँ अब छाक सबनकी आवैजी ॥ १ ॥
बछरा हांकलेहु अगवाई भोजन करिहैं जाईजी ॥
चले हरषि तहँते बलबीरा वंसीबट समुहाईजी ॥
वंसीबट अति सुभग सुहावन चहुँदिश लता सुहाईजी ॥
चरत बच्छ सब वनके माहीं हरि बैठे बट छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बोर पास बालक सकल, मध्यश्याम सुखदाइ ॥
मोरमुकुटकुंडल सुभग, कोटि काम बलिजाइ ॥

चौबोला–कोटिकाम बलिजाइलकुटकर बाहुबिसालसुहाईजी ॥
गुंजनके आभूषणकीने सो छवि वरनि नजाईजी ॥
सखावृन्द सब सुन्दर सोहत निरखत मदन लजाईजी ॥
करत परस्पर हास विलासा प्रेममगन मनमाईजी ॥ १ ॥
तहां छाक सबके घर घरते आई भरि भरि भाराजी ॥
यशुमति अपने सुतको पठये व्यंजन बहुत प्रकाराजी ॥
छाक पठाई मात कहत हरि हँसि हँसि बारहिबारीजी ॥
सबमिलि भोजन करिये भाई कहत सखन बनवारीजी ॥ २ ॥

दोहा–बन भोजन विधि करत हरि, छाक धरी इकठोर ॥
दोना बहुत पलाशके, ल्याये ग्वाला तोर ॥

चौबोला—ल्याये ग्वाला तोर कछुक फल राखत बनके ल्याईजी
अतिसुन्दर सोभित विधिनाना स्वाद न बरने जाईजी ॥
बैठे मंडल जोर गुपाला मध्य श्याम सुखदाईजी ॥
व्यंजन अमित प्रकार रसाला परसत ग्वाल सुहाईजी ॥ १ ॥
मुरली मुकुट कांखतर लीनो खानलगे अभिरामाजी ॥
मधु मंगल परसैन सुदामा सुबल सुखम श्रीदामाजी ॥
अपर अनेक गोपसुत लीने जेवत मिल बनधामाजी ॥
लेत परस्पर कौर छिनाई देत कबहुँ घनश्यामाजी ॥ २ ॥

अथ ब्रह्माके मोहकी लीला।

दोहा—कबहूँ काउअ देन कह, कबहुँक लेत छिनाय ॥
खट्टे मीठे स्वाद कहि, करत केल सुखपाय ॥

चौबोला—करत केल सुख पाय देखत सुर चढे बिमानन माईजी॥
लखि कौतुक हरिके चकृत भये गये विरांचिके पाईजी ॥
कह्यो ब्रह्मसों जाय सकल सुर तुम जो कहत हरि ताईजी ॥
छोर छोर कर खात कौर निज ग्वालन संग कन्हाईजी ॥ १ ॥
हरिमाया मोहे सब प्राणी कहा ब्रह्मा मुनि ज्ञानीजी ॥
सुनि विरंचि सुरगणकी बानी भयो मोह मनमानीजी ॥
गोकुल जन्म कौन यह आयो मैं कछु भेव न जानीजी ॥
परचौले देखों अब बालक बछरा सब हर आनीजी ॥ २ ॥

दोहा—जो येईश भगवान हैं, तो लेहैं मँगवाय ॥
यह विचार मन विधि चल्यो, वृन्दावन समुहाय ॥

चौबोला—वृन्दावन समुहाय चल्यो विधि देख्यो बन तहँजाईजी
पुहुप लता द्रुम परम सुहावन यमुना तट मन भाईजी ॥
अति रमणीक कदम चहुँपासा बंसीवटकी छांईजी ॥

गोप मंडली मंडन मोहन जेंवत कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
देखि विरंचि चकित भ्रमछायो हरे बच्छतिन आईजी ॥
हरि अंतर्यामी सब जानी बिधिके मनकी पाईजी ॥
तब पठये द्वैग्वाल कन्हाई घेरहु बछरा जाईजी ॥
इत उत फिरत ग्वाल तहां डोले बछरा पावत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ग्वाल सकल बनढूंढिकै, फिर आये हरिपाहिं ॥
गये बच्छ बहु दूर कहुँ, खोजहु पावत नाहिं ॥

चौबोला—खोजहु पावत नाहिं रहो तुम यों हँसि कह्यो कन्हाईजी
मैंधौं देखों जाय बनहिंमें चले आप बहराईजी ॥
जब गये दूर बनहिं जगत्राता बालक विधि लिये आईजी ॥
प्रभु लीलाकी गम कछु नाहीं गर्बित विधि पुरजाईजी ॥ १ ॥
राखे बाल बच्छ इक ठोरी निजमाया बशमाईजी ॥
गुणसागर नागर बंसीवट आये कुँवर कन्हाईजी ॥
दीनबंधु भक्तनहितकारी यह उरबुद्धि उपाईजी ॥
मात पिता दुख पावहिं जो ब्रज बाल बच्छ नहिं जाईजी॥ २ ॥

दोहा—बाल बच्छ विधि ले गयो, हरि मन कियो विचार ॥
याविध दुख टारन करौं, रूप सबनके धार ॥

चौबोला-रूप सबनके धार वैसई रूप वैस गुण माईजी ॥
वैसी बुद्धि पराक्रम शीला पहिचाने नहिं जाईजी ॥
रंग रेख जैसो जिहिं मांई अंग अंतर कछु नाईजी ॥
बोलन हँसन चलन चतुराई टेरन फेरन राईजी ॥ १ ॥
मारन ऊधारन सब कारन सब समरथ सुखदानीजी ॥
तदपि जानि निज दास विरंची करी तासुकी कानीजी ॥
मन भायो ताको हरि कीनो अपनो कर विधि जानीजी ॥
अनजाने ढीठो इन कीनी यह हरि निज मन मानीजी ॥ २ ॥

दोहा–कह्यो श्याम सब सखनसों, घेरहु बछराजाय ॥
सांझ भई ब्रजको चलैं, हार्षि चले समुदाय ॥
चौबोला–हर्षि चले समुदाय हरीके चहुँदिश सखा सुहावेंजी ॥
मध्य श्याम बछरन अगुआये चले सकल ब्रज आवेंजी ॥
वेणु विसाल रसाल बजावत अपने रंगानि गावेंजी ॥
रांभति गाय बच्छ हित लागी ब्रज जन देखन धावेंजी ॥ १ ॥
मोर मुकुट कुंडल बनमाला सुन्दर नैन सुहाईजी ॥
गोपदरज मुखपर छविछाई मनहुँ चंद अमि आईजी ॥
ब्रज बनिता सब तन मन वारत निरखत रूप लुभाईजी ॥
पहुँचे ब्रजहि श्याम सुन्दरवर सब निज निज घर मांईजी॥ २ ॥
दोहा–ग्वाल बाल बछरा हरषि, लिये मात उरलाय ॥
कृष्णचरित जानत नहीं, प्रीति करत अधिकाय ॥
चौबोला-प्रीति करत अधिकाय यशोमति हरिसों वचन सुनावेजी
बनहिं रात कतकरत ललरि वेग घरहि किन आवेजी ॥
मैं घर चलों सबेर बनहिंते सखा अबेर लगावेंजी ॥
देखि अगम बन डरोंरी मैया वे मोहिं बहुत डरावेंजी ॥ १ ॥
हरिकी बालि बालि जात यशोदा बार बार पछिताईजी ॥
ल्यावहिं गाय चरायवेहि सब तुम जिन जाहु कन्हाईजी ॥
यह सुनके हँसि कहत मुरारी अब बन जात बलाईजी ॥
लागी भूख बहुत मोहिंहैरी तुरतहि देहि जिमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–लेआई माखन तुरत, तबलों खाहु कन्हाय ॥
है जल तप्तहि घामको, तेल परसि ल्यो न्हाय ॥
चौबोला–तेल परसिलो न्हाय जाते सब बनको श्रम मिटजाईजी
भोजन करहु बहुर दोउभाई कहत यशोमति माईजी ॥
तब जननी गहि बांह न्हवाये बलिको लियो बुलाईजी ॥

परमप्रीति परसतहै माई जेंवत दोऊ भाईजी ॥ १ ॥
जेंइ उठे अचवन तब कीने बिरा रोहिणी ल्याईजी ॥
जान उनीदे सेज बिछाई पौढाये दोऊ भाईजी ॥
श्याम राम सोवत दोउ भाई सुखपावत दोउ माईजी ॥
अघ मारचो विधि गर्व नवायो यह कोउ जान न पाईजी॥२॥

दोहा—बाल वत्स नौकृत तिन्हैं, ब्रज बनिता अरु धेनु ॥
पूरब प्रीतिहुते अधिक, करत रहत दिन रैनु ॥

चौबोला—करत रहत दिन रैनु सच्चिदानंद हरि ब्रज माईजी ॥
लगे देन सुख घरन घरहि प्रभु भक्तनके सुखदाईजी ॥
तब विरंचिके मन यह आई देखों ब्रजको जाईजी ॥
ह्वैहैं करत विलाप कलापा विन बच्छा सब गाईजी ॥ १ ॥
आय विरंचि तुरत तहां देख्यो कौतुक घर घर माईजी ॥
जहां तहां दुहत गाय पशु पालक बालक खेलत पाईजी ॥
देखि विरंचि चकित मन माई हैं ब्रजके वह नाईजी ॥
मैं विधिना सब सृष्टि उपाई यह धौं किनाहिं बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कै मोई भ्रममें परचो, हैं हरि लखे न जाय ॥
अंतर्यामी जान प्रभु, यह सब लिये मँगाय ॥

चौ०-यह सब लिये मँगाय अतिहि संभ्रम विधि ज्ञानभुलायाजी।
गयो बहुरि निज लोकहि धाई बाल बच्छ तहां पायाजी ॥
देखे बाल बच्छ जहँ राखे चकित बहुरि ब्रज आयाजी ॥
क्षण भूतल क्षण लोक सिधावै दोऊ ठौर लखायाजी ॥ १ ॥
बरस दिवस यहि भांति बितायो विधि अति भ्रम मन आनाजी॥
मोह बिकल अति देखत विधिको सुन्दर श्याम सुजानाजी ॥
प्रगट कियो जन जान आपनो विधिके उर में ज्ञानाजी ॥
हृदय भयो तब शुद्ध लखत हरि ये पूरण भगवानाजी ॥ २ ॥

दोहा—धृकधृक मेरी बुद्धि यह, हरिको नहिं पहिचान ॥
मैं मतिहीन न जानिये, मोह बिवस छलठान ॥
चौबोला—मोह बिवस छलठान यह अपराधबहुत बनिआयोजी
निज अज्ञान न प्रभुको चीनां विधि मन अति पछितायोजी ॥
भई गिलानी अति जियमाई मन मन बहुत डरायोजी ॥
भयो सोच उरमांझ विशेषी प्रभु परताप लखायोजी ॥ १ ॥
बालक वत्स सहित सब जेते हरिके रूप लखावैजी ॥
शिव ब्रह्मादिक देव जितेका स्तुति जोर सुनावैजी ॥
चरण कमल वंदन प्रभु केरे गंधर्व जन गुण गावैजी ॥
देखि चकित चित भर्मनशायो कृष्ण ब्रह्म दरशावैजी ॥ २ ॥
दोहा—शरण शरण कहि शरणकहि, पर्चो चरणमेंजाय ॥
अन जाने ढीठोकरी, क्षमिये त्रिभुवनराय ॥
चौबोला—क्षमिये त्रिभुवनराय तिहारी गति कछुपरत न जानीजी
तुमरी माया मांझ भुलानो ढीठो तुम सों ठानीजी ॥
चूकपरी मोते निज भोरे क्षमा करो सुखदानीजी ॥
मैं अपराधी हीन मतीकर पर्चो मोह वशआनीजी ॥ १ ॥
नाथ न बने तुम्हें मुख मोरे तुम बिन और न केवाजी ॥
मैं ब्रह्मा प्रभु कियो तुम्हारो कहा जानूं तुम भेवाजी ॥
आदि सनातन अजित अजहि हरि तुम देवनके देवाजी ॥
मोसमकोटिन ब्रह्मा तुमरी करत चरण नितसेवाजी ॥ २ ॥
दोहा—बिनजाने जनते बने, सो प्रभु मानतनाहिं ॥
ज्यों शिशु अज्ञानदोष उर, जननी मानत नाहिं ॥
चौबोला—जननी मानत नाहिं पोषताको बहुलाडलड़ाईजी ॥
विकसित चित्त अंकले भरही गिरत धरणि उरलाईजी ॥
तैसेई प्रभु मोको कीजे क्षमिय दोष शरणाईजी ॥

तुमजाने विनजीव सदाई उतपाति परलै माईजी ॥ १ ॥
तुम कारि कृपा जनावहु जाई सो जाने प्रभुताईजी ॥
मैं विधि एक लोक को साई जिमि कृमि गूलर माईजी ॥
तुमरे रोम रोम प्राति गाता कोटि ब्रह्मांड निकाईजी ॥
कोटि खद्योत प्रकाश कराई रवि सम होय सो नाईजी ॥२॥

दोहा—अब प्रभु वेग सँभारिये, क्षमिय नाथ अपराध ॥
तुम अविगतिकोजानहीं, हौं प्रभुअगमअगाध ॥

चौबोला—हौं प्रभुअगमअगाधकियोछलमेंविधिअतिअज्ञानीजी॥
करिये विरदकी लाज हरी तुम ममकृत दोष नमानीजी ॥
अब मोहिं शरण राखिये स्वामी दीनबंधु सुखदानीजी ॥
शरण शरण कहि विधि भयमानी कही दीन वहुबानीजी ॥१॥
तब नाहिं बालबच्छ कछु देखे कृष्ण रूपदरशायोजी ॥
कृपाकरी तब श्री ब्रजनाथा हस्तकमल शिरलायोजी ॥
अभय कियो सब सोच मिटायो विधि मन अतिसुखपायोजी ॥
बार बार पद कमल निहोरी कारि स्तुति हरषायोजी ॥ २ ॥

दोहा—ज्योति रूप उर पुर बसत, जगतधाम सुख श्याम ॥
अगम निगम नाहिं पावहीं, सो खेलत नँदधाम ॥

चौबोला-सो खेलत नँदधाम अनल जल धरणि पवन नभ काईजी
पांच तत्त्व मिल जगत उपाया अमित भांति प्रभुताईजी ॥
काल डरत जाके भयभारी बांधे ऊखल माईजी ॥
जगकरता पालन संहरता विश्व भरन सुखदाईजी ॥ १ ॥
ते गैयन सँग ग्वालन माहीं ब्रजमें झूठन खाईजी ॥
बडे भाग्य ब्रज वासिन केरे जिनके रहत बसाईजी ॥
जिनके प्रेम रहत हारि घेरे धनि ब्रजवासी गाईजी ॥

१ कीड़ा-भुनगा। २ जुगनू। ३ अग्नि। ४ आकाश।

एक ब्रह्म अनीह अविगाति फँसे घरनि घरमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–धनि बसुदेवहि देवकी, जिनाहिं पुत्र करि पाय ॥
धन्य यशोमति नंद तुम, हित करि गोद खिलाय ॥
चौ०-हित करि गोद खिलाय ग्वाल धनि जिन संग बछरा चरायाजी
चार मुखहि मैं कहा बरनों शेष सहस मुख गायाजी ॥
धनि धनि बालक बच्छ जिनाहिते नाथ दरश मैं पायाजी ॥
परसि चरण सरोज मस्तक सकल पाप नशायाजी ॥ १ ॥
ब्रजको बास देहु प्रभु मोहीं यहै आश मन माईजी ॥
रेणु तृण द्रुम लता खग मृग जो तुम्हरे मन आईजी ॥
नित्य ब्रजलीला तुम्हारी तुम अनुग्रह पाईजी ॥
महत श्रीवृन्दाविपिनको अमित सकत नाहिं गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–लोक न मोहिं सुहात अब, आन करो विधिकाय ॥
मोहिं ग्वालनको अत करौ, दीजिय झूंठनखाय ॥
चौबोला–दीजिय झूंठन खाय नाथ यह बरमांगत बलबीराजी॥
ह्वै रहों वृन्दाविपिन रेणुका परसहुँ चरण समीराजी ॥
करि स्तुति गदगद मुख वाणी दृगजल पुलक शरीराजी ॥
परयो चरण पंकजमें बहु विधि अतिशयप्रेम अधीराजी ॥ १ ॥
तब हँसि बोले गर्वप्रहारी भक्तनके हितकारीजी ॥
जाहु आपने धाम विरंची मानहु बात हमारीजी ॥
और काहि अब करौं विधाता कर्म धर्म दातारीजी ॥
तुमते है यह सब संसारा मम माया अति भारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ब्रजकी करहु प्रदक्षिणा, मम आयसु तुमपाय ॥
तनके पाप नशाय सब, करहु लोक सुखजाय ॥
चौबोला-करहु लोक सुख जाय हरी उर हार विधिय पहरायोजी॥
बिदा कियो उर सोच मिटायो विधि अति मन सुख पायोजी ॥

पाय प्रसाद हराषि मुखचारी प्रभु आयसु शिरनायोजी ॥
ब्रज दाहिन फिर पाप नशाये बालवत्स सब ल्यायोजी ॥ १ ॥
बार बार चरणन शिरनायो विधि निजलोक सिधायोजी ॥
ग्वालन कछु यह भेव न पायो वही समय दरशायोजी ॥
हरिसों कहत बिलम कहांलाई तुम बिन हम नहिं खायोजी ॥
तुम सब जेवन मांझ भुलाने वत्स दूर ते ल्यायोजी ॥ २ ॥

दोहा—खोजत खोजत थक रह्यो, पाये दूरहि जाय ॥
सो ये अब तुमरे निकट, दीने सब मैं ल्याय ॥

चौबोला-दीने सब मैं ल्याय सखनसों कह्यो श्याम सुखदाईजी ॥
तब सुचते ह्वै रुचि सों ग्वाला रहे सकल मिल खाईजी ॥
भोजन कियो सखन सँग रुचिसों सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
जल अचयो धोये वदन सब यमुनाके तट जाईजी ॥ १ ॥
संध्या समय चले घर ग्वाला मध्य श्याम नँदलालाजी ॥
कांधिनपर छींके धरलीने उर गुंजनकी मालाजी ॥
जन जन भृंग बजावत जाई ब्रज आवत गोपालाजी ॥
घर आये ब्रज मोहन लाला कहत यशोदहि ग्वालाजी ॥ २ ॥

दोहा—अहो महिर बन जायके, मारचो असुर कन्हाइ ॥
सर्प रूप निगिले सकल, कीनी सबकि सहाइ ॥

चौबोला-कीनी सबकी सहाय गिरि कंदरसम रह्यो मुखबाईजी॥
हम देखत तिहिं ठौर हरीने डारचो तुरत नशाईजी ॥
याके बल हम वदनन काऊ फिरत सकल वनमांईजी ॥
जीते असुर बनहिंजे आये हरचो कबहूं नाईजी ॥ १ ॥
बीते बरस कहत ग्वाला अघ आजहि हन्यो सुनावेजी ॥
यह प्रभु लीला अपरमपारा पार न कोऊ पावेजी ॥
मैं बरजत बन जात कन्हाई यशुमति यों समुझावेजी ॥

केती करवरते प्रभु राख्यो तबहूं नाहिं डरावैजी ॥ २ ॥

दोहा–अति विचित्र गतिईशकी, बातन जानीजाय ॥
मानतनाँहिमेरो कह्यो, खिजतियशोमतिमाय ॥

चौबोला–खिजति यशोमति मायकहतहरिअबबनमेंनहिंजाईजी
प्रभुकी लीला कहत न आवै सुर नर असुर लुभाईजी ॥
पयपीवत पूतना नशाई पटक्यो शिलातृणाईजी ॥
तीन लोक मुखमें दिखरायो दिये वृक्ष ढरकाईजी ॥ १ ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे विधिको गर्व नशायोजी ॥
यशुमति यह पुरषारथ देखी तापर हरि समुझायोजी ॥
अघा मार आये नँदलाला घर घर ग्वाल सुनायोजी ॥
सुनि सुनि धाई ब्रजकी नारी निरख श्याम सुख पायोजी ॥२॥

दोहा-मन मन यह सबही कहत, इन सम नहिं कोउ आन॥
ब्रजके राखनहार यह, हैं हमरे पतिप्रान ॥

चौबोला-हैं हमरे पतिप्राण कहति इक सुनहू सखी सयानीजी ॥
हैं हरि जगतपती हम जानी आपुस में बतरानीजी ॥
लहत परम सुख हरिहि निहारी प्रेम मगन मन मानीजी ॥
भोजन मांगत यशुमति पासा ब्रज मोहन सुखदानीजी ॥ १ ॥
खाउ लाल तुमको जो भावे कहति यशोमतिमाईजी ॥
सद माखन व्यंजन विधि नाना जो तुमरी रुचि पाईजी ॥
माखन रोटी देरी मैया और न मोहिं सुहाईजी ॥
खात हँसत मिल संग सखनके रुचि कर कुँवर कन्हाईजी॥२ ॥

दोहा–हँसि बोले हरि मातसों, दुहनी दे मोहिं माय ॥
नंद बबा सिखयोजु मोहिं मैं दुहिहौं निज गाय ॥

चौबोला–मैं दुहिहौं निज गाय धोरि धूमरि अरु काजरि गाईजी
तुरतहि दुहि ल्याऊं दे मैया ग्वालनते अधिकाईजी ॥

भयो मोहिं बल माखन खाई अब मैं नाहिं डराईजी॥
तोहिं नहीं पतियारो आवे बूझ देख बलभाईजी॥ १॥
भोरे भाव देखि हँसि माता उरलाये सुखदाईजी॥
कहति कहां इतनी बुधि पाई हर्षित लेत बलाईजी॥
लई दोहनी दई मात तब दोहन जात कन्हाईजी॥
बछरा छोरि तुरत थनलायो लखि जननी हरषाईजी॥ २॥

दोहा–सखा कहत सब परस्पर, हमहूंते बडियात॥
दुहन देहु मोहिं कछुक दिन, देखैंको अधिकात॥

चौबोला-देखैंको अधिकात जबाहिं लगि एक दुहो तब ताईजी॥
दश न दुहौं तो नंद दुहाई हँसि हँसि कहत कन्हाईजी॥
सखा कहत सब झूंठहि मोहन नंद दुहाई खाईजी॥
प्रात साथ हम तुम मिल दुहिहैं देखेको अधिकाईजी॥ १॥
भली कही यह बात सखा तुम कह्यो कान्ह हरषाईजी॥
हम तुम होड लगाके भाई प्रात दुहैंगे गाईजी॥
श्रीव्रषभानु कुँवरि मन माई श्यामहिं विसरत नाईजी॥
दरश लालसा दृगन न थोरी देखे बिन न सुहाईजी॥ २॥

दोहा–सुरत श्याम दरशन करी, उठी प्रात चलिजात॥
जात किते राधा कुँवारि, पूछति कीरति मात॥

चौबोला–पूँछति कीरति मात कह्यो मैं जात दुहावन गाईजी॥
दुहत सबेरे गाय गुवाला ताते भोरहि जाईजी॥
काल्ह तनकमें बिलम लगाई उठे अहीर रिसाईजी॥
गई गाय सब बच्छ पियाई रीती दोहनि ल्याईजी॥ १॥
तुमहूं खिजन लगी तब ताते जात तोहिं कहि माईजी॥
ऐसे कहि जननी समुझाई चली ब्रजहि समुहाईजी॥
नंद सदन आई हरि प्यारी दुहत तहां हरि गाईजी॥

दोउन परस्पर लखि सुख पायो निरखत छबि हरषाईजी ॥२॥

दोहा—राधेहि यशुमति देखि तब, लीनी निकट बुलाय ॥
दंपतिको मुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ॥

चौ०-मुदित यशोमति माय युगल लखि अति हरषितमनमाईजी
मथन कह्यो दधि श्रीराधा सों हर्षि यशोमति माईजी ॥
भान कि सौंह दई तब राधा उठी मथन हरषाईजी ॥
नेत पाणि मन अति अनुरागी माट बिलोवत जाईजी ॥ १ ॥
वैसिय भई श्याम मति भोरी राधा तन टक लाईजी ॥
वृषभहि सों बछरा लेलावत बिसर गये कित गाईजी ॥
दंपति दशा देखि नँदरानी चकित भई मन माईजी ॥
राधा सों कहि प्रगट जनाई किन तोंहि मथन सिखाईजी ॥ २॥

दोहा—निज घर ऐसेंहि मथतकै, मोपर आय भुलाइ ॥
मैं नाहिं मथन कियो कबूं, तुम मोहिंसौंह दिवाइ ॥

चौबोला—तुम मोहिं सौंह दिवाइ यशोदा मैं मथ जानत नाईजी॥
तुमरो वचन सकी नाहिं त्यागी तबइ मथनमैं आईजी ॥
तब नँद घरनी मथन सिखायो लखति प्रिया मन लाईजी ॥
बछरा पद अटकाय लखत हरि दुहन गाय बिसराईजी ॥ १ ॥
दुहनी श्याम मांगि तब लीनी तुरत सखा दइ ल्याईजी ॥
कहत दुहो हरि करो बड़ाई हँसत सखा समुदाईजी ॥
बोले सखा सकल मिल हरिसों कहां तुम रहे लुछाईजी ॥
सुनत सखनकी बात न मोहन प्यारी तन चितलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—रहे श्याम इक टक निरखि, प्रिया वदन दृगलाय ॥
भूल गये सब चतुरता, देह दशा बिसराय ॥

चौबोला—देह दशा बिसराय देखि राधे तन यशुमति हेरोजी ॥
यह ढंग हेरी प्यारी तेरे बिसर गयो सुत मेरोजी ॥

ऐसो हाल मथत दधि कीनो भयो हरि चित्र चितेरोजी ॥
नैननिगति लखि खंजन लाजै चंद्रबदन मुख तेरोजी ॥ १ ॥
चपलाहूते चमकतहैरी देखत श्याम लुभाईजी ॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नांई कहा गुणत मनमाईजी ॥
इकटक दीठ तहींते लाईं तनकी सुरत भुलाईजी ॥
अबहीं बहुत होतहै तोई ऐसे ढंगन लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ऐसे ढंग जिन लावरी, काज नहीं तोहिं धाम ॥
चितयो मतिहि करै इतो, खेलहु मिल सँग श्याम ॥

चौबोला—खेलहुमिल सँगश्याम राधिका कैतू इत मतिआवैजी॥
धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं जिन ऐसे ढंग लावैजी ॥
देखत तोहिं श्याम सुधिजावै तूसुधि बुधि बिसरावैजी ॥
सूधे रहि जो ह्यां तू आवै यह ढंग मोहिं न भावैजी ॥ १ ॥
करत अचकरी तू इत आई यह मोहिं नाहिं सुहाईजी ॥
सूधे खेल श्याम संगहिल मिल कहेदेत समुझाईजी ॥
सीखदई प्यारीको ऐसे यशुमति महरि रिसाईजी ॥
बोली प्रिया बचन अति मोमें कछु यक मन सुधि आईजी॥२॥

दोहा—अपनोसुतबरजत नहीं, नित उठ मोहिं बुलात ॥
बिनदेखे मोते कहत, नेकहु नाहिं सुहात ॥

चौबोला—नेकहुनाहिं सुहात कहत तब छोह लगत सुनबानीजी
तब आवतिमैं इहां महरानी अपने मन सुख मानीजी ॥
मुखपावति आवति मैं ताते तुम कछु औरहि ठानीजी ॥
यशुमति सुनि प्यारीकी बातैं भोरे भावलखानीजी ॥ १ ॥
प्यारी मनते रोष मिटावत बांह पकरि उरलावैजी ॥
हँसति कहति मैं तोसों प्यारी तूजिन मन दुखपावैजी ॥

१ बिजुली। २ गाय। ३ पुत्र।

मैं जैसी तेरी महतारी यों यशुमति समुझावैजी ॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई गृह तोहिकाज सिखावैजी॥२॥
दोहा–सुनि यशुमतिके वचन वर, बोली भोरीबात॥
टहलकरत मोहिंकोलखै, खिजतमाय सों तात॥
चौबोला–खिजत मायसों तात यशोमति सुनि राधा सुखपाईजी
श्री वृषभानु लाडिली जानी यशुदा मन हरषाईजी॥
अति सप्रेम दुलराय कही तब लई बहुरि उरलाईजी॥
श्री राधाके चितते शीघ्रहि दीनो क्षोभ मिटाईजी ॥ १ ॥
हरि प्यारीकी ये चतुराई कापै बरनी जाईजी॥
बातनहीं यशुमति भरमाई लीनी सहज सुभाईजी॥
कहत सखा हरिसों मुसकाई कहा तुम दुहत कन्हाईजी॥
काल्ह दुहत हे होड लगाई बिसरे आज बड़ाईजी॥ २ ॥
दोहा–कम्पत कर दुहनी गिरत, वृषभहि बछरालाइ॥
सुनि ग्वालनके वचनबर, सकुचे कुँवर कन्हाइ॥
चौबोला–सकुचे कुँवर कन्हाइ बछर तब दीने खरक चलाईजी॥
आय मात सों कहत कन्हाई टेरत मोहिं बलिभाईजी॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो सुनि आऊं तहां जाईजी॥
जननी हरषि तुरत सब दीने लीने कुँवर कन्हाईजी॥ १ ॥
चारु पीत पट कटि लपटाई मुरली मधुर बजाईजी ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी गये बुलाय कन्हाईजी॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई यशुदहि कहत सुनाईजी॥
जाति घरहिमें प्रातहि आई खरक दुहावन गाईजी॥ २ ॥
दोहा–खरक ग्वाल पायो नहीं, खोजतिमें इतआइ॥
इहां अजिर गैया दुहत, देखे कुँवर कन्हाइ॥
चौबोला–देखे कुँवर कन्हाइ तनक कर देखरही चितलाईजी॥

सने प्रेमरसबचन प्रियाके सुनि अति सरल सुभाईजी ॥
कहति कुँवरि सों जान घरहिको यशुमति मन हरषाईजी ॥
हमरो मिलन महरिसों कहियो खेल्यो करि नित आईजी॥ १॥
मन हर लीनों कुँवर कन्हाई चली कुँवरि हरषाईजी ॥
गई खरक कर दोहनि लीने चितवत इत उत जाईजी ॥
तहां सखि मिली बहुत सो बूझति कहां अकेली आईजी ॥
प्रात दुहावन मात पठाई मिल्यो ग्वाल कोउ नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ग्वाल बुलावन इत गई, जात दुहावन गाय ॥
बोल उठे हरि हम दुहैं, दोहनियो इत आय ॥

चौबोला–दोहनियो इत आय हरीने दोहनि देन बुलाईजी ॥
सुनत गई प्यारी हरषाई देखति सखि समुदाईजी ॥
कहत सखी सब मन मुसकाई कहां इन प्रीति लगाईजी ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हाई कहां दुहावन आईजी ॥
हरि मुख लखि वृषभानु किसोरी प्रेम विवस सुधि नाईजी ॥
मोहन लई दोहनी करते प्रिया प्रीति रस छाईजी ॥
धेनु दुहावत प्यारी हित करि दोहत कुँवर कन्हाईजी ॥
सो सुखकापै जात कह्यो तहां लखति सखी हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गोथन लीनो हाथ हरि, बछरा पद अटकाय ॥
दूधधार छाँडत छलन, प्रिया वदन दृगलाय ॥

चौ०–प्रिया वदन दृगलाय दुहत हरि धेनु सो अति छविछाईजी॥
प्यारी पास दुहावत ठाढी सो छवि कहत न आईजी ॥
प्यारी तन इक धार पखारे एक दोहनी माईजी ॥
हरि करते पयधार छुड़ाई लसत पिया मुख जाईजी ॥ १ ॥
मनहुं मयंक कलंक पखारी शोभित चंद्र सुधारीजी ॥
कैधौं पयानिधि खोरि चंद्र सुधा लसत कलंक बिडारीजी ॥

लसत नील पट कनक किनारी मोरति मुख हँसि प्यारीजी ॥
होत हिये थोरे नहिं दोऊ बिलमत युगल निहारीजी ॥ २ ॥
दोहा—भरे युगल आनन्द मन, मिलन चहत शकटारि ॥
हाव भाव दंपति भरे, देखति ब्रजकी नारि ॥
चौबोला—देखति ब्रजकी नारि लाडिली हरिपै धेनु दुहाईजी ॥
बिलसत ब्रज बिलास मोहनसों तीनलोक सुख नाईजी ॥
दुही कुँवर नँदलाल हर्षि जब श्रीराधाकी गाईजी ॥
दुहनी देत न हँसाति प्रिया तब मांगाति हाहा खाईजी ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों प्रिया हाहा करि मांगत त्यों त्यों हँसत कन्हाईजी ॥
उरझे प्रेम दोऊ बिवस अति सो सुख बरनि न जाईजी ॥
फिर हाहाकर कहत कन्हाई देहों नंद दुहाईजी ॥
फिर हाहा करि हँसी लाडिली दोहनि दइ सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हाव भाव करि मन हरचो, कुँवरि विदा हरि कीन ॥
यह छबि निरखि हँसी सखी, चली अग्र परबीन ॥
चौबोला—चली अग्रपरबीन लाडिली हरिको निरखतजावैजी ॥
चलन चहत पगपरत न घरको मनमोहन मन भावैजी ॥
अंतर नेक न हरिसों चावे पुरजन ते सरमावेजी ॥
धिक यह लाज कहति मन माहीं दरशन हानि करावेजी ॥ १ ॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताऊं दूरिकरो दुखदाईजी ॥
यह बिचार मनमें ठहरायो चली सदन हरषाईजी ॥
मुरि मुरि नँदनंदनतन हेरत विरह व्यथातन छाईजी ॥
आगे धरत परत पगनाहीं मन मन मोहन माईजी ॥ २ ॥
दोहा—चितवत उत हरि खरकते, प्यारी तन मनलाय ॥
भये दृगनकी ओट दोउ, गये सदन सुखपाय ॥

१ दोनों। २ कृष्ण। ३ आंखैं।

चौबोला—गये सदन सुखपाय राधिका आवति सखियन जानीजी
कहन चहति प्यारी सों सब मिल मन अति आनँद मानीजी ॥
हरषि सबै ठीढी भइ मगमें प्रेम मगन मुसकानीजी ॥
बूझति सखी सबै राधासों कहहु न कुँवरि सयानीजी ॥ १ ॥
और अहीर मिल्यो कोउ नाहीं हरि पै गाय दुहाईजी ॥
यह सुनि चकित भई मति भोरी गिरी धरणि मुरझाईजी ॥
देखि सखी सब आतुर धाईं लइ उठाय उरलाईजी ॥
क्यों नागरी गिरी मुरझाई दोहनि भूमि गिराईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति सखिन सों लाडिली, मोहिंकारे अहिखाइ ॥
देखि सकल व्याकुल भईं, आपुसमें बतराइ ॥

चौबोला—आपुसमें बतराइ अबहिं यह देखतनीके आईजी ॥
कहा भयो कारे कित खाईं देख्यो अहि कहुँ नाईजी ॥
यह तो कारो कुँवर कन्हाई हम कहुँ फूंकलगाईजी ॥
ताकी मुर मुसकन विष याके रोम रोम रह्यो छाईजी ॥ १ ॥
तन मन हगन साँवरो छायो देह गेह विसराईजी ॥
सब सखियन मिल यह ठहराई प्रिया सदन पहुँचाईजी ॥
लेहु महरि यह सुता आपनी देखहु शीघ्रहि आईजी ॥
कहुँ कारे याको डसिखाई गिरी धरणि मुरझाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वेगयत्न याको करो, ल्यावहु गुणी बुलाय ॥
ज्यों त्यों हम ल्याई यहां, गयो वदन कुम्हिलाय ॥

चौबोला-गयो वदन कुम्हिलाय सुनतही उठी मात अकुलाईजी
रोवाति धाय कंठ लपटाई कहा व्यथा भइ आईजी ॥
प्रात उठी नीके गइ घरते बरजति मानत नाईजी ॥
अतिहि हठीली कह्यो न माने सोइ करत मन भाईजी ॥ १ ॥
डरी मात लखि अंग झुराये शिथिल खेद जल छावैजी ॥

महरि नगरके गुणी बुलाये सुनत सकल उठ आवैजी ॥
थके सकल कछु भेव न पावैं पढि पढ़ि मंत्र जगावैजी ॥
गारुडि हारि रहे मनमाहीं कीरति मन पछितावैजी ॥ २ ॥

दोहा—फिर फिर बूझति सखिन सों, कहो मोहिं समुझाइ ॥
कहत सखी सब महरिसों, हम सब यह लखिपाइ ॥

चौबोला—हम सब यह लखिपाइ आगे हम पाछेते यह आईजी ॥
गिरी धरणि दुहनी ढरकाई तब हम बूझन धाईजी ॥
यही कह्योकारे मोहिं खाई तब हम लई उठाईजी ॥
सो कारो हमहूं पुनि देख्यो लग्यो अधिक विषयाईजी ॥ १ ॥
मानलेहु यह बात हमारी तुमसों कहत जनाईजी ॥
बडो गारडू है ब्रज माहीं नँदको कुँवर कन्हाईजी ॥
देखतही विष जाय वेग तुम ल्यावहु ताहि बुलाईजी ॥
हम सबको यह सांच आय वे तुरतहि लेहिं जिवाईजी ॥ २ ॥

दोहा—गुणी न ऐसो और कोऊ, जैसो कुँवर कन्हाइ ॥
देखौ धौं तुम बात यह एकहि मंत्र जिवाइ ॥

चौ०—एकहि मंत्र जिवाई कीरति यह सखियन मुख सुन पाईजी॥
अपने मनमें सांची मानी सोचरही मन माईजी ॥
इक दिन राधाहू यह वाणी मोहिंको आय सुनाईजी ॥
कीरति चली नंदके धामा यशुमतिके ढिग आईजी॥ १ ॥
अहो गारडू सुवन तुम्हारो यशुदहि कहत सुनाईजी ॥
मेरी सुता लाडिली गोरी विह्वल विकल मुरझाईजी ॥
प्रातहि खरक दुहावन आई तहां कहुँ कारे खाईजी ॥
यह यशहै है बड़ो तिहारो पठवहु नेक कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कीरतिसों यशुमति कह्यो, भइ तुम महरि अयान ॥
मंत्र यंत्र जाने कहा, षटहि बरसको कान्ह ॥

चौबो०-षटहि बरसको कान्ह तुमहिंको दीनीकिन बहकाईजी ॥
यह तुम बूझो गुणिन बुलाई बालक अबहिं कन्हाईजी ॥
मैं चकृत सुन वचन तिहारो अचरज बात सुनाईजी ॥
श्याम भयो कब गारुड मेरो तुम अति आतुर आईजी ॥ १ ॥
अबलौं सुनी न कान कहूं यह गारडु भयो कन्हाईजी ॥
बालक अति अज्ञान अबहि यह मंत्र यंत्र कहां पाईजी ॥
महरि गारडू कुँवरकन्हाई राधा मोहिं सुनाईजी ॥
एकलरिकनी कारे खाई तुरतहि श्याम जिवाईजी ॥ २ ॥

दोहा-मैं आई आतुर इहां, पठवहु नेक कन्हाइ ॥
ममकुँवरी व्याकुल अती, देहैं श्याम जिवाइ ॥

चौबोला-देहैं श्याम जिवाइ यशोदा बडो धर्मयश पाईजी ॥
वेग बुलाय श्यामको दीजै यशुमति सुन मुसकाईजी ॥
अबहिं हती मेरे घरआई कब कारे कहां खाईजी ॥
है राधा मोहन कछु कारण चुपहि रही मनमाईजी ॥ १ ॥
वहां सखी ललतादिक आईं सब मिल करत विचाराजी ॥
याहिडसी वन्सीधरकारे चितवन विषकी झाराजी ॥
प्रेम प्रीति दोउ डारतजारा गुणी सकल पचिहाराजी ॥
यह विष जाय तबहिं वे आवैं मोहन नन्दकुमाराजी ॥ २ ॥

दोहा-सखी एक हरि पै गई, तिन सब कह्यो बखान ॥
अहो महरके लाडले मोहन श्याम सुजान ॥

चौबोला-मोहन श्याम सुजान दुहुन यह कित सीखेचतुराईजी॥
आज भोरही खरक मांझ जिन तुमते गाय दुहाईजी ॥
वेग विलोकहु तासु दशा अब तुम निज नैनन जाईजी ॥
अहो अनोखे गाय दुहैया भली दुही तुम गाईजी ॥ १ ॥
घरलौं कुँवरि जान नहिं पाई गिरीधरणि मुरझाईजी ॥

देखत संग सखी सब धाई ज्यों त्यों गृह पहुँचाईजी ॥
सो अब तनुकी सुधि न सँभारी परी विकल बिलखाईजी ॥
सकसकात तनु खेदबहाई क्षण क्षण लेत जँभाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहति मोहिं कारेडसी, कियो यत्न गुणि लागि ॥
ताहि नहीं उपचार कछु, तुम्हरे नामते जागि ॥

चौबोला—तुम्हरे नामते जागि तबहिं सब सखियन मोहिं पठाईजी
यह विष तुम्हरो निश्चय जानी हमको परत लखाईजी ॥
यह कारो अहि रूप तुम्हारो मुसकन विष लगाईजी ॥
वेग चलो जिन गहर लगावो चाहो ताहि जिवाईजी ॥ १ ॥
दरश दिखाय हरो तुम पीरा विरह विकल बिलखाईजी ॥
तुम अश्वनीकुमार कन्हाई चलहु न लेहु जिवाईजी ॥
टेर कहत हम सुनियो कानन नजरदीठ नहिं जाईजी ॥
नाहिं जावहि तो देहिं प्राण सब नंद द्वार पर आईजी ॥ २ ॥

दोहा—घरनि महर वृषभानुकी, व्याकुल जननी तास ॥
वेग जाय सुधि लीजिये, गई यशोमति पास ॥

चौबोला—गई यशोमति पास कीरती आगम सुनत कन्हाईजी॥
कीनी बिदा सखी मुसकाई चले सदन सुखदाईजी ॥
जो कहुँ डसी भुजंगम प्यारी तो हम लेहिं जिवाईजी ॥
ऐसे कहि हरि निज गृह आये लीने मात बुलाईजी ॥ १ ॥
तुम जानत कछु मंत्र कन्हाई बूझति यशुमति माईजी ॥
कीरति महिर बुलावन आई राधेहि कारेखाईजी ॥
कुँवरि जिवावहु झारहुजाई ह्वैहै अधिक बड़ाईजी ॥
गारुड भयो भले सुत जानी आप श्रवण सुन पाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बोले जननी सों हरी, एक मंत्र मोहिं आत ॥
अहि काट्यो दृष्टिहु परे, मोपै मरन नपात ॥

चौबोला–मोपै मरन न पात सुनतही जानत कहत कन्हाईजी ॥
देवहु प्यारी जाय जिवाई मिलिहै तुमहिं भलाईजी ॥
मात वचन सुनि कीरतिके सँग चले श्याम सुखदाईजी ॥
चली महरि हरि संग लिवाई भानपुरा समुहाईजी ॥ १ ॥
देखीजाय लाडिली जननी अतिहि गई कुम्हलाईजी ॥
शिथल अंग व्याकुल अतिजानी लीनी कंठ लगाईजी ॥
लैके महरि कुँवरिको हरिके परी चरणमें आईजी ॥
अति व्याकुल यह सुता हमारी मोहन देहु जिवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनी कुँवरि श्रवणन यह, आये श्याम सुजान ॥
धन्य धन्य कहि आपको, हृदय हरष रहिमान ॥

चौबोला–हृदय हरष रहिमान रोम तनु प्रगटहि खेद बढाईजी॥
विह्वल देखि जननि अकुलाई लखि मन हँसत कन्हाईजी ॥
अंतर भाव भेद हरिजाने भक्तनके सुखदाईजी ॥
जब कछु पढिकै कुँवर कन्हाई मुरली अंग छुवाईजी ॥ १ ॥
तब दृग खोले कुँवरि लाडिली देखे श्याम कन्हाईजी ॥
समुझि सकुचि सब बसन सँभारे देखतिदृग सुखपाईजी ॥
बूझति बात मात सों प्यारी आज कहाहै माईजी ॥
जननी कहति हरषि उरलाई तोहिंको श्याम जिवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–बड़ी आज करवर टरी, करति लाज तू काय ॥
यों कहि अति अनुराग भरि, परी श्यामके पाय ॥

चौबोला–परी श्यामके पाँय यह यश बडो कियो सुखदाईजी॥
सुता हमारी मरत जिंवाई धनि तुम कुँवर कन्हाईजी ॥
उर लगाय मुख चुंबन करिकै पुनि २ लेत बलाईजी ॥
धन्यकोख यशुमति रानीकी जहां अवतरे आईजी ॥ १ ॥

१ कान। २ शरीर। ३ दुःखित। ४ नेत्र। ५ स्नेह।

कह्यो खान घनश्यामसों कीरति मेवा मिश्री ल्याईजी ॥
बिदा किये देपान हरषि हरि चले शयन सुखदाईजी ॥
महरि मनहिं मनमें अनुमानी जोरी विधिहि बनाईजी ॥
ब्रज घर घर यह खबर चलाई गारुड बडो कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–एक सखी हरिसों कह्यो, भले गारडू राय ॥
प्रगट्यो गारडु नाम अब, लीनी मरत जिवाय ॥

चौ०–लीनी मरत जिवाय मात मन कहति मेरो अति बारोजी॥
अब धो कौन करै निरवारौ है ब्रजको रखवारोजी ॥
जान्यो कठिन बसत ब्रज कारो यह मंतर न बिसारोजी ॥
फिर कारो कहुँ करै पसारो लैहैं नाम तुम्हारोजी ॥ १ ॥
यह गारुडी कहां तुम पाई प्यारी मरत जिवाईजी ॥
अब हम जानी बात तुम्हारी जावहु सदन कन्हाईजी ॥
हँसि वशकीनी घोस कुमारी रसिक मुकुट मणिराईजी ॥
विवस भई सब ब्रजकी बाला गये सदन सुखदाईजी ॥

दोहा–कारो सुत नँदरायको, जाकी लीला नित्त ॥
तिनहीं को हरि डसत है, जिनको उज्ज्वल चित्त ॥

चौ०-जिनको उज्ज्वल चित्त धन्य ब्रज धनि धनि ब्रजकी बालाजी
विहारन धनि सब ब्रजकी गाई धन्य ग्वाल गोपालाजी ॥
दुहत चरावत हरि हितकारी जिनके सँग नँदलालाजी ॥
प्रात होत बल मोहनलाला गाय बच्छ सँग ग्वालाजी ॥ १ ॥
चले चरावन बन मनमोहन सखा संग लिये गाईजी ॥
देखति मुदित सकल ब्रजनारी जात बनहिं सुखदाईजी ॥
गैया बगर गईं बनमाहीं हरि ठाढे तरु छाईजी ॥
सखा लिये सँग सुबल सुदामा खेलत. दोऊ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गुण गावत श्रीकृष्णके, चारत गैया ग्वाल ॥

करत खेल नाना रँगन, गये बन सघन विसाल ॥
चौबोला–गये बन सघन विसाल कोऊलै गैयन घेरत धाईजी ॥
कोऊले बछरन बिलगावत टेरत कोऊ गाईजी ॥
आप अकेले रहे कन्हाई हलधरहू सँग नाईजी ॥
सखा रहे कित बन बिलमाई मन मन कहत कन्हाईजी ॥ १ ॥
गये दूर कहुँ सुनियत नाहीं रांभत बछरा गाईजी ॥
आलस गात जानि मनमोहन बैठे तरुकी छाईजी ॥
सखा वृन्द लीने बलरामा गाय बच्छ समुदाईजी ॥
वृन्दावन घन छांडि सकल मिल गये ताल वनमाईजी ॥ २ ॥

अथ धेनुकवध लीला।

दोहा–देखि भूमि सुन्दर परम, मन हरषे सब ग्वाल ॥
अति रसभर मीठे मधुर, फरे विपुल तरु ताल ॥
चौबोला–फरे विपुल तरु ताल तहां सब गोधन दिये बगराईजी
लगे खान फल मन हरषाई ग्वाल सखा समुदाईजी ॥
अचयो बलरस ताल रसाला अति आनँद उरमाईजी ॥
कह्यो सखन सों कहां कन्हाई सुरत श्यामकी आईजी ॥ १ ॥
चलहु वेग जहां कुँवर कन्हाई बछरन घेरहु जाईजी ॥
बनमें श्याम अकेले जानी हलधरके मन आईजी ॥
टेर दई सब ग्वाल बुलाये आतुर घेरहु गाईजी ॥
तहां असुर इक धेनुक नामा खर स्वरूप बनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सोयो तरुकी छांयमें, महाबली विकराल ॥
सुनत सोर धायो तुरत, मनहुँ भयंकर काल ॥
चौबोला–मनहुँ भयंकर काल देख सब बलिको टेरि सुनायोजी ॥
भाजे जित तित भयके मारे निज निज प्राण बचायोजी ॥
असुर महाबल गर्व बढायो बलिके सन्मुख आयोजी ॥

देखि असुरमन अति रिस करिकै बलिको मारन धायोजी ॥१॥
बलि सँभारि उठ कोप कियो मन चले असुर समुहाईजी ॥
अग्रज भ्राता श्यामसुन्दरको तिहुँ पुर जासु बड़ाईजी ॥
बलिको आवत जान असुर जब मन इक बुद्धि उपाईजी ॥
आय भयो ठाढो सन्मुख तब बलिपर चपर चलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मारनको धायो असुर, बलि मन तामस आइ ॥
चरण चलाये असुर तब, गहि लीने दोउपांइ ॥

चौबोला—गहिलीने दोउ पाँइ फेरि पटक्यो तरुतालहि लाईजी॥
भयो प्राणविन तरुहि गिराई चली नहीं चतुराईजी ॥
उख्यो सकल बन घनघहराई तरु टूटे अरराईजी ॥
और बहुत धेनुकपरिवारा दीनेमारगिराईजी ॥ १ ॥
मारचो असुर महा दुखदाई ग्वालन करी बडाईजी ॥
आये सब वृन्दावन माहीं श्यामहिं टेरलगाईजी ॥
चढि चढि द्रुमन पुकारत ग्वाला आवहु श्याम कन्हाईजी ॥
आवहु मधुर बजावहुवेणू ल्याये घेर सबगाईजी ॥ २ ॥

दोहा—अति कोमल तुम्हरे चरण, वनजिन डोलहुलाल ॥
ऐसे टेरत श्मामको, तृषित भये सब ग्वाल ॥

चौबोला—तृषितभये सब ग्वाल तहांकहुंबिछुर रहेबालि वीराजी
गाय बच्छ सब ग्वाल सकल मिल गये यमुनके तीराजी ॥
गोप गाय अचवत भये सबही कालीदहको नीराजी ॥
निकसत सब व्याकुलभये जहांतहां बिसरे सुरत शरीराजी१॥
जहँ तहँ रहे लगी विषझारा परे सकल मुरझाईजी ॥
भये मनो बिनप्राण ताहि क्षण ग्वाल बच्छ सब गाईजी ॥
हरिठाढे वंशीवटछाईं मनहीं कहत कन्हाईजी ॥
अबहि रहे सब संग चरावत निकसि गये बन माईजी ॥

दोहा–गोरांभन ग्वालन वचन, परत न मोहिं सुनाइ ॥
टेरत है हरि सखनको, तरुचढि हेरत गाइ ॥
चौबोला–तरुचढिहेरतगाइ आहट कछु सुनि कालीदहधाईजी
शोधलेत उत चले कन्हाई ढूँढत बनमे जाईजी ॥
गाय ग्वाल सब मुर्छित पाये जानि लई सुखदाईजी ॥
अहिकाली ह्यां आय समान्यो रहत गरुड भयपाईजी ॥ १ ॥
अचयो इन ताको विष पानी विषते मुर्छा आईजी ॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारे उठे तुरत हरषाईजी ॥
देखि कृष्णको अति सुख पायो मिले सकल उठधाईजी ॥
तुम सब मोहिं छोड़िकै आये बोले हरि मुसकाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कित इत निकसे आय तुम, मैं ढूंढत बनताल ॥
खोजलेत आयो इहां, देखे सब बेहाल ॥
चौबोला–देखे सब बेहाल तुम्हें कहा भयो यहां जंजालाजी ॥
उठे एकही बार बहुरि तुम गाय बच्छ अरु ग्वालाजी ॥
देखि मोहिं अचरज भयो भारी कियो कहा यह ख्यालाजी ॥
सुनि हरि वचन परम सुखदाई कहत सुनो नँदलालाजी ॥ १ ॥
अचयो तृषित यमुन जल आई गिरे सब तट अकुलाईजी ॥
कारण कछु जान्यो हम नाहीं गये प्राण क्षणमाईजी ॥
यह हम जानी कुँवर कन्हाई तुमहिं जिवाये आईजी ॥
हो तुम ब्रजजनके रखवारे जहां तहां होत सहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बलदाऊकी सुरत करि, चलहु आपने धाम ॥
सखा बोलल्याये बलहि, हँसे देखके श्याम ॥
चौबोला–हँसे देखके श्याम कहत बलि कहां तुमगये कन्हाईजी
रहे अकेले वनमें भैया हम ढूंढे सब ठाईजी ॥
चलहु वेग अब घरको भाई लै आगे सब गाईजी ॥

हेरी देत चले सब ग्वाला हरि गुण गावत जाईजी ॥ १ ॥
गोधन आगेदिये चलाई सखन मध्य दोउ भाईजी ॥
चले ब्रजहि ब्रजजन सुखदाई निरखत मदन लजाईजी ॥
सुनि मुरलीकीटेर सुन्दरी निरखनको उठ धाईजी ॥
आवत बनते धेनु चराई लखति सखा मन लाईजी ॥ २ ॥

दोहा—निरखनको मनभावतो, सुन्दर हरि ब्रजराज ॥
लाज साज सब छांडिकै, धाई तज गृह काज ॥

चौबोला—धाई तज गृहकाज कहति वे आवत हैं दोउभाईजी ॥
सुबल सुदाम श्रीदामा गोहन अपर सखा समुदाईजी ॥
शीश मुकुट कटि कछनी काछे मेघ श्याम छवि छाईजी ॥
कमल वदन करवेणु बजावैं गौरी राग सुहाईजी ॥ १ ॥
भ्रुकुटि विसाल कमल दल नैना गोपदरज छवि छाँईजी ॥
श्रवणनि कुंडल अधिक सुहावन कोटि मदन बलि जाईजी ॥
निरखति मुदित सकल ब्रजबाला घर आये सुखदाईजी ॥
ब्रजजीवन बलि मोहन छवि लखि जननी लेत बलाईजी ॥ ८ ॥

दोहा—यशुमति सों ग्वालन कह्यो, धनि बलि मोहनभाइ ॥
नरतनु धरकोउदेव इन, लियो जन्म ब्रजआइ ॥

चौबोला—लियो जन्म ब्रज आइ यहीहैं सब ब्रजके रखवारेजी॥
गाय गोपके राखनहारे जीवन प्राण हमारेजी ॥
गर्धव रूप असुर बलिमारचो अरु बहुदनुजबिडारेजी ॥
हम सब यमुना तट मुरझाये सबको श्याम उबारेजी ॥ १ ॥
अब हम काऊते नाहिं डरपत येहैं हमाहिं सहाईजी ॥
बलि मोहनके बल हम डोलत बन बन चारत गाईजी ॥
जब हरि होत सहाय हमारी गाढ मरत तब आईजी ॥
यशुमति उभय कुँवर ये तेरे चिरजीवो दोउ भाईजी ॥ २ ॥

दोहा—यशुमति सुनि ग्वालन बचन, गर्ग कही सुधि पाय ॥
कहति मनहिं हरिचरित लखि, प्रगटे देवकोउ आय ॥
चौबो०-प्रगटे देवकोउ आय कहति धनि धनि ये ब्रजमें आयेजी ॥
धन्य धन्य हम सुत करि पाये यशुमतिके मनभायेजी ॥
अतुलित कर्म दुहुँनके जानी दोउ जननी सुख पायेजी ॥
श्याम राम दोऊ नँदरानी हर्ष सहित उर लायेजी ॥ १ ॥
भूखे जानि न्हवाये जननी दीने तुरत जिमाईजी ॥
भोजन करि अचये दोभाई लिये पान सुखदाईजी ॥
पौढे सेज दास हितकारी बिहारन बलि बलि जाईजी ॥
चिन्तामणि हरिजन सुखदाई कालीकी सुधि आईजी ॥ २ ॥
दोहा—विषधर इहां नीको नहीं, वृन्दाबनके पास ॥
यमुनाजल निर्मल करों, कालिहि देहुँ निकास ॥
चौबोला—कालिहि देहुँ निकास मनहिमन ऐसे कहत कन्हाईजी ॥
यह मनहीं मन करत विचारा भये नीद वश आईजी ॥
यशुमति हरिको सोवत जानी लगी काजगृह जाईजी ॥
खरे न बोलन देती काउअ घरमें यशुमति माईजी ॥ १ ॥
बलि मोहन सोवत सुखदाई मत कहुँ ये जगि आवेजी ॥
शिव सनकादि दिवस निशि ध्यावे अंत कबहुँ नाहिं पावेजी ॥
ब्रह्म सनातन आनँद खानी नन्द अवास सुहावेजी ॥
देख्यो नंद श्यामको सोवत श्रमित जानि मन लावेजी ॥ २ ॥
दोहा—आप हठीले ये दोऊ, मोहन अरु बलिबीर ॥
करसों पोंछत सुभग तन, करत प्रेमकी पीर ॥
चौबोला-करत प्रेमकी पीर तहां निज पलका लियो मंगाईजी ॥
सोये हरिके ढिंग नँदराई अति आनँद मन माईजी ॥

१ दिन। २ रात। ३ घर। ४ हाथ।

यशुमतिहू पौढ़ी जब अति सुख अर्ध निशा ह्वै आईजी ॥
जाग उठे तब कुँवर कन्हाई कहां गईरी माईजी ॥ १ ॥
सँग सोवत बलरामहिं जान्यो अतिहि श्याम अकुलायोजी ॥
जागे नँद अरु महरि यशोदा तुरतहि गोद उठायोजी ॥
काहे झिझकि उठ्यो मन मोहन दीपक जोर दिखायोजी ॥
सपने गिरचो यमुन जल जाई जनुकिन मोहिं गिरायोजी ॥२॥

दोहा–नित प्रति मैं बरजत रहों, तू हठि यमुना जाय ॥
सुधि रहिगई है न्हानकी, जिन हो लाल डराय ॥

चौबोला-जिन हो लाल डराय संग तब ले पौढे नँदराईजी ॥
किहिं कारण जित तित फिर डोलत वृन्दावन तू जाईजी ॥
अब तू वृन्दा बन जिन जावै तहां धौ रहत बलाईजी ॥
सोये दंपाति बीच कन्हाई नींद तुरत ही आईजी ॥ १ ॥
सपनों सुनि जननी अकुलाई नंदहि कहत सुनाईजी ॥
या ब्रजके जीवन दोउ भाई देख्यो स्वप्न कन्हाईजी ॥
यहै यत्न इनको अब कीजै जाय न चारन गाईजी ॥
गृह संपति बहु प्रभुकी दीनी इनते कौन सवाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हँसी करत सब गोपगण, ये गउचारन जात ॥
दंपाति आपुसमें कहत, बीत गई सबरात ॥

चौबोला–बीत गई सब रात सबे तारागणगये छिपाईजी ॥
गयो तिमिर अंबुज विकसाये कुमुदनि गइ सकुचाईजी ॥
भूलगये सब सोच समाजा यशुमति काज सिधाईजी ॥
प्रातस्नान यसुन नित जावत चले न्हान नँदराईजी ॥ १ ॥
मथन हार ग्वालिन सब जागी जहां तहां मथत सुहाईजी ॥
हरि प्यारी गैयनको हितकारि राख्यो दधिहि जमाईजी ॥
सोहरि हित माखनके काजै मथति यशोमति माईजी ॥

सद्माखन निज पाणि मथन करि धरचो मथनियांमाईजी॥२॥

दोहा–राखतिमाखन श्याम हित, बडभागिन नँदनारि॥
लगी जगावन भोरही, उठहु श्याम बनवारि ॥

चौ०-उठहु श्याम बनवारि प्रगट भयो रविहि किरणमहिछाईजी
खोलदेहुदृग कमल कन्हाई मैं तुम्हरी बलिजाईजी ॥
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावत तुमहित आये धाईजी ॥
उठि तिनको मिलकै सुख दीजै करहु कलेउ कन्हाईजी ॥ १ ॥
तब हरि उठिकै दरशन दीनों जननी लेत बलाईजी ॥
दाऊजी कहि श्याम पुकारे नीलाम्बर उघराईजी ॥
मानों घनतें शशि भयो न्यारो मुख छवि सुन्दरताईजी ॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ भाई गौर श्याम छवि छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–शयन भवनते निकसि हरि, बाहर आये श्याम॥
लखि जननी दोऊ सुखी, सुन्दर छवि अभिराम॥

चौबोला-सुन्दर छवि अभिराम दुहुन कर दतवन दीने माईजी
चौकी बैठ मुखारी कीनी हँसि हँसि दोऊ भाईजी ॥
मातन निज निज कर मुख धोये आलस दिये मिटाईजी ॥
अचरन सों मुख कमल अँगोछे लाये उर सुख पाईजी ॥ १ ॥
कर कलेउ कहुँ जावहु दोऊ कहति यशोमति माईजी ॥
मथ्यो मधुर मीठोमैं माखन मिश्री पीस मिलाईजी ॥
माखन रोटी दई मातकर जेवत दोऊ भाईजी ॥
अरु मेवा पकवान मिठाई लेहु सोई रुचि आईजी ॥ २ ॥

अथ कालीदमन लीला॥

दोहा–प्रभुके मनकी जानिकै, करमन परमहुलास ॥
ऋषि नारद मथुरापुरी, गये कंसके पास ॥

१ ताजा। २ सूर्य्य। ३ घर। ४ आनन्ददायक।

चौबोला—गये कंसके पास देखिकै उठ्यो भूप शिर नाईजी ॥
करी दंडवत आसन दीनो कृपा करी ऋषिराईजी ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई लखत सोच मन माईजी ॥
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई एकहि सोच गुसाईजी ॥ १ ॥
येदोउ ब्रजमें नन्दकुमारा मोंहिं अवतार लखाईजी ॥
कहत जिन्हैं बलराम कन्हाई तिनकी गति नहिं पाईजी ॥
प्रथम पूतना दई पठाई सो नहिं पाछी आईजी ॥
तृणावर्तसे दैत्यपठाये दीने तुरत नशाईजी ॥ २ ॥

दोहा—उनते नहिं कारज सर्‌यो, सुनि मोंहिं आवतिलाज ॥
किहिं विधि मारों नन्दसुत, कहो मोंहिं ऋषिराज ॥

चौबोला—कहो मोंहिं ऋषिराज जानतमुनि हरिकेगुणमनमाईजी
सुनत वचन नृपके ऋषि नारद रहे मनहिं मुसकाईजी ॥
सत्यकही तुम बात भूप यह कहत ऋषी समुझाईजी ॥
ये दोऊ अवतार प्रगट भये इन गति जानि न जाईजी ॥ १ ॥
प्रगट भये ब्रजमें यह आई हैं यह तुम्हरे कालाजी ॥
तुम इनको राखो मतिदोऊ नंद गोपके बालाजी ॥
एक बात मेरे मन आवै करहु कंस भूपालाजी ॥
काली अही रहत यमुना तहां बिकसे कमल विसालाजी ॥ २ ॥

दोहा—फूल मँगावहु तहांते, देवहु दूत पठाय ॥
जायकहै ब्रजमें सबन, नंदहि दे डरपाय ॥

चौबोला—नंदहिदे डरपाय सुनत यह ब्रजके लोग डरावैजी ॥
ये बातें वेहू सुनपावै तिनपै सहिय न जावैजी ॥
जैहैं अवशि फूलके काजै तहां अहि घात चलावैजी ॥
भलो मंत्र मुनि मोंहिं बतायो ऐसे कंस सुनावैजी ॥ १ ॥
धनि धनि कहि पुनि पुनि शिरनायो हर्षि चले ऋषिराईजी ॥

तबहि कंस इक दूत बुलायो दीनों ब्रजहि पठाईजी ॥
दीनो ताको पत्र लिखाई कहियो नँद सों जाईजी ॥
कोटि कमल कालीदह केरे कालिह देहु पहुँचाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नृपति मँगाये काज हित, बनिहैं तुम्हें पठाय ॥
चल्यो दूत आतुर ब्रजहि, जान्यो कुँवर कन्हाय ॥
चौबोला-जान्यो कुँवर कन्हाय आप रहे बनहिं पठाये ग्वालाजी
बिहारन हरि जनके सुखदाई ब्रजजीवन नँदलालाजी ॥
दूतहि आवत जान हरी तब भक्तनके रछपालाजी ॥
सुन्दर श्याम सुजान खेलत हरि संग गोपके बालाजी ॥ १ ॥
आये नंद यमुन जलन्हाई तबहिं छींक भई बाईजी ॥
महर मलीन भये मन माई रहे सोच वश आईजी ॥
तबहीं चल्यो दूत ब्रज आयो घरहि मिले नँदराईजी ॥
बोलि लिये पाती कर दीनी नृपके वचन सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कालीदहके फूलले, कालहि देहु पठाय ॥
जो नहिं फूल पठाय हो, ब्रजकोउरहन न पाय ॥
चौबोला—ब्रज कोउ रहन न पाय गोप नँद उपनँद ये समुदाईजी॥
डारों मार न राखों एकहु दीनी दूत सुनाईजी ॥
जो नाहिं कालिह कमल आवें तो दोउ सुत बांध मँगाईजी ॥
यह सुनि नन्दगये मुरझाई लीने गोप बुलाईजी ॥ १ ॥
और गोप आये जेते सब देखत दूत डराईजी ॥
तिन सबको सब बात सुनाई परी आय कठिनाईजी ॥
कोटि कमल कालीदह माई कौन निकासे जाईजी ॥
कह्यो कालिह मैं फूल न पाई दोउ सुत बांध मँगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मेरे सुत दोउ नृपति उर, खटकत हैं दिनरात ॥
आज कहीं सो बात यह, बलि मोहन पर घात ॥

चौबोला—बलि मोहनपरघात काल्हिनृप चढि हैं ब्रजपरधाईजी
कोराखै कित जाय भाजि अब बन्यो मरन यह आईजी ॥
सोच श्याम बालिको उरमांई अपने जियको नाईजी ॥
अब उवार दीसतनहिं कोई राखैं इनहिं छिपाईजी ॥ १ ॥
रहै सदन बलि मोहन मोहिं बरु बांधो किन नृपराईजी ॥
नंद वचन सुनि ब्रजवासिनके अधिक उदासीछाईजी ॥
काहू पै कछु कहत नआवै रहे त्रसित मुरझाईजी ॥
मानहुँ चित्र लिखे से ठाढे ब्रजवासी समुदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नन्दघरनिब्रजनारि सब, जुरमिल करति विचार ॥
अति व्याकुल मनमाहिं सब, रहीनैनजलडार ॥

चौबोला—रहीं नैन जलडार बसत ब्रज जन्महिं गयो सिराईजी ॥
इहि विधि कंस न कबहुँ रिसान्यो करी आज कठिनाईजी ॥
कालीदहके फूल मँगाये को अब ल्यावै जाईजी ॥
भये कंस भय बहुत दुखारे रहेसोचमें छाईजी ॥ १ ॥
कोऊ कहत शरण चलो नृपके अरु कछु नाहिं उपाईजी ॥
ऐसे मिल सब कहत चलहु अब देहु नृपहिं धन जाईजी ॥
यहै सोच में परे सकल मिल चलत न और बसाईजी ॥
घर घर यहै विचार करत सब नन्द भवन ब्रज माईजी ॥

दोहा—खेलत ते आये घरहिं, अंतर्यामी जानि ॥
दृग भरि लिये लगाय उर, देखतही नँदरानि ॥

चौबोला—देखतही नँदरानि मात तन चितये हरि सुखदाईजी
बूझत कत रोवत दुखपाई कहति काय नाहिं माईजी ॥
बूझहु जाय तातसों मोहन मैं तुम्हरी बलि जाईजी ॥
तुमहीं काज कंस अकुलावत जिन कहुँ जाहु कन्हाईजी ॥ १ ॥
जाय तातको सोच मिटावो मधुरें वचन सुनाईजी ॥

जान्यो मात पिता दुख पायो गये जहां नँदराईजी ॥
तात दुखित कत तुम अरु माई बूझत कुँवर कन्हाईजी ॥
मोसों बात कहो किन सोई कहा सोच रह्यो छाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहा कहूं तुमते हरी, लिये गोद बैठाय ॥
जबते तुमरो जन्म है, तबते नृप अकुलाय ॥
चौबोला—तबते नृप अकुलायकेतिइक दीने दैत्य पठाईजी ॥
कुलके देवन करी सहाई लीने तुमहिं बचाईजी ॥
प्रथमहिं अधम पूतना आई शकट तृणा दुखदाईजी ॥
वत्स बका अघ बन में आये कीनी बिधिहि सहाईजी ॥ १ ॥
कालीदहके फूल कोटि अब मांगे हैं नृपराईजी ॥
सब ते परी कठिन यह आई कोकरि लेत सहाईजी ॥
जो नहिं आवैं फूल लिख्यो नृप दीनो पत्र पठाईजी ॥
करों ब्रजहि निर्मूलतेरे सुत दोउअन बांधि मँगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बाबा तुम दुख पातकत, अबलोंकीनिसहाय ॥
रहत ब्रजहिसो देवता, अबहूँ करिहैं आय ॥
चौबोला—अबहूं करिहैं आयलियो जिन सबही ठौर बचाईजी ॥
करलेहैं अब सोइ सहाई मतिडरपौ मन माईजी ॥
सोई कंसहि फूलपठावै ब्रजकोसोच मिटाईजी ॥
सोईकेशगहि कंसहिमारे भूको भार नशाईजी ॥ १ ॥
सब मिल सोई देव मनावो डारो सोच मिटाईजी ॥
सुनत महरि हरि मुखकी बानी भये सुखित नँदराईजी ॥
इष्टदेव को शीशनवायो जहां तहां करी सहाईजी ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी करहुसहाय पुनि आईजी॥२॥
दोहा—ऐसे विनवत नंदजी, पुनि पुनि देवमनाय ॥
मात पितहि ढंगलायहरि, चले खेलन हरपाय ॥

चौबोला—चले खेलन हरषाय सखनमधि पहुँचे कुँवरकन्हाईजी
कह्यो खेलिये गेंद मँगाई सकल सखन समुझाईजी ॥
श्रीदामा यह सुनत तुरतही गयो धाम निजधाईजी ॥
अपनि गेंदलै आय घरहिते दीनीहरिको आईजी ॥ १ ॥
बाहिर घोष निकास जाय तहां चलो खेलिये भाईजी ॥
खेलन बनहिं गेंद जहां नीके तहांकोउ आय न जाईजी ॥
सखन संगले बाहिर जाई खेलन लगे कन्हाईजी ॥
इक मारत इक भाजत जाई इक रोकत मगमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—नाना रंग किलकारिकर, मारत आपुसमाहि ॥
मार भजत जहि गेंद जो, सो मारत पुनि ताहि ॥

चौबोला—सो मारत पुनि ताहि खेलत हरि सखन संग गोपालाजी
यमुना तट तन लीने जाई खेलकरत सब ग्वालाजी ॥
आपुन जात कमलको लालन सखालिये सब ख्यालाजी ॥
कोजाने यह हरिके ख्याला पहुँचे तट नँदलालाजी ॥ १ ॥
श्याम सखा तन गेंद चलाई मोरचो अंग बचाईजी ॥
परी गेंद यमुनाजल माई बिगरचो खेल तहांईजी ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा देवहु गेंद कन्हाईजी ॥
जान बूझ तुम गेंद बहाई सोइ गेंद देल्याईजी ॥ १ ॥

दोहा—सखा हँसे सब तारिदे, भली करी तुम कान्ह ॥
दीनी गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामाहिं आन ॥

चौबोला-देहु श्रीदामाहिं आन सखा सब हरिसों कहत सुनाईजी ॥
शिव ब्रह्मा मुनि पार नपावै सुरन मुकुट मणिराईजी ॥
झगरत सखा गेंदके काजै अविगति जानि न जाईजी ॥
छांडि देहु मम फेंट श्रीदामा कहत श्याम सुखदाईजी ॥ १ ॥
फेंट न गहो कहो मैं तासों देहों गेंद मँगाईजी ॥

छोटो बड़ो न जानत काऊ करत बराबर आईजी ॥
हम काहेको तुमहिं बराबर उपजे नँद घर माईजी ॥
ऐसे अब हम गये बिलाई तुमहिं बराबर नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हम तुम एकहि जोटहैं, तुमते मैं नडराइ ॥
वनहिं मँगाये गेंद अब, चलिये नाहिं धुताइ ॥

चौबोला—चलिये नाहिं धुताइ बहुरि तू करत बराबरि आईजी
तू नहिं जानत मेरी धुताई जानत देत भुलाईजी ॥
प्रथम पूतना शकटा मारचो तृणावर्त दुखदाईजी ॥
बत्स बकासुरवनके माई मारे जानत नाईजी ॥ १ ॥
अब मारौं पुनि देखत तोई जानत मेरी धुताईजी ॥
तुम मारे सो सत्य कन्हाई हमहीं कहा डराईजी ॥
कंस कमल अब देहु तबहिं तुम हमहिं मारियो आईजी ॥
कल्हहि परि है जानि पकरि जब कंस बाँधले जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बहुत अचकरी कर रहे, देत फूल किनल्याय ॥
सांच कहत श्रीदाम मैं, फूलकाज इहां आय ॥

चौबोला—फूलकाज इहां आय देख तोहिं अबहीं ल्यायबताऊंजी
जाके भय तू मोहिं डरावत केश पकरि ढरकाऊंजी ॥
देखोगे तुम देखत मारों नेकहु नाहिं डराऊंजी ॥
कोटि कमल तिहिं आज पठाऊं ब्रजको त्रास नशाऊंजी ॥ १ ॥
कालीदह जल पियत मरे सब सो काली गहि ल्याईजी ॥
लीनी रिस करि फेट छुड़ाई चढे कदम पर धाईजी ॥
श्रीदामाके डर हरि भागे कहत सखा समुदाईजी ॥
रोय चल्यो श्रीदामा घरको कहत महरिसों जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—लेहु गेंदमैं ल्यातहों, कहत श्याम सुखदाइ ॥
यह कहि नटवर रूप हरि, कूद परे जलजाय ॥

चौबोला–कूद परे जलजाय पुकारे सखा सकल हाय हाईजी ॥
भये श्याम बिन बहुत दुखारे रोवत ब्रजतन जाईजी ॥
कोमल तन अति सुभग साँवरो नटवर रूप बनाईजी ॥
जलमें पैठ गये तहां मोहन जहां सोवत अहिराईजी ॥ १ ॥
भूखे ह्वै हैं जानि हरी अब इहिं अन्तर हरिमाईजी ॥
मोसों भोजन मांगि हैं मोहन खेलत ते अब आईजी ॥
यशुमति चली रसोई कारण तबहिं छींक भइ बाईजी ॥
ठिठकरही उरसोचत ठाढी भली भई यह नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–आय अजिर ठाढीभई, चली सो दोष मिटाय ॥
मंजारी सन्मुख फिरी, बहुरि फिरी घरआय ॥

चौबोला-बहुरिफिरी घरआय व्याकुलभई निकरिद्वारलों जाईजी
कहा धौं खेलत हैं मेरे बारे कहति यशोमति माईजी ॥
बांये काग दाहिने खरखर सुनि व्याकुल फिर आईजी ॥
खिन बाहिर खिन आँगन माहीं टेरति मनहिं कन्हाईजी॥ १ ॥
तबहीं चले नंद घर आये दहिने रोय सुनायोजी ॥
सन्मुख गररी करत लराई शिरते काग उडायोजी ॥
आये घरहि यशोदहि देखी अतिहि सोच उरछायोजी ॥
बूझत यशोदहि नंद डराई काहे मुख मुरझायोजी ॥ २ ॥

दोहा–चली रसोई कारने, छींक भई मोहिआज ॥
मंजारी इतते चली, निकरी इतको भाज ॥

चौबोला–निकरी इतको भाज तबहिंते सोच रही मनमाईजी ॥
समुझि कंस नृप पोच मेरे मन त्रास रह्यो अति आईजी ॥
नंद कहत पैठत घर माहीं मोहिं शकुन भले नाईजी ॥
आज कहा यह समुझि न जाई कित बलराम कन्हाईजी ॥ १ ॥
महरि महर मन त्रास जनायो खोजत हरिको जाईजी ॥

सखा सकल इहि अंतर रोवत देखे आवत धाईंजी ॥
महरि महरसों आय जनाई बूड़े यमुन कन्हाईजी ॥
सुनि दंपति बूझत अकुलाई कहा कहो समुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत कदम चढे तबै, कूदपरे जलजाय ॥
कीनो सपनो सत्य हरि, सुनत गिरी मुरझाय ॥
चौबोला–सुनत गिरी मुरझाय रोवत तट यमुनाके नँदराईजी॥
बालक सब नंदहि सँगधाये चले बतावन जाईजी ॥
ब्रजवासिन यह बात सुनी तब उठधाये बिलखाईजी ॥
कहां परचो गिर कुँवर कन्हाई दीनी ठौर बताईजी ॥ १ ॥
त्राहि त्राहि करि नंद पुकारे गिरे धरणि मुरझाईजी ॥
लोटत अति व्याकुल धरणी पर परन चले जलधाईजी ॥
कहत श्याम तुम अति दुख दीनो मोको बैस बुढाईजी ॥
दीन वचन सुन नंदमहरके रोवत लोग लुगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरि तुम ब्रज सूनो कियो, कहत सकल अकुलाय ॥
ताक्षण सबको दुख भयो, सो दुख कह्यो नजाय ॥
चौबोला-सो दुख कह्यो नजाय गोप सब कहत नँदहि समुझाईजी
बन्यो मरण सबहीको आई सुनहु महर नँदराईजी ॥
हरि बिनको जीवै ब्रजमाहीं जीवन प्राण कन्हाईजी ॥
मोह मगन अति श्यामसुन्दरको टेरति यशुमति माईजी ॥ १ ॥
माखन धरचो खाउ किन आई कहां तुम बेरलगाईजी ॥
अति कोमल तुमरे मुख योगू जेंवहु लेहुँ बलाईजी ॥
धौरी दूध धरचो औटाई तुमहिं दुही जे गाईजी ॥
सदमाखन अति हित मैं राख्यो आजगये नहिं खाईजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रातहि दिये जगायउठ, करिदँतवन दोउभाइ ॥
गये निहाराति पंथमें, खेलत देरलगाइ ॥

चौबोला–खेलत देर लगाइ आय अब बैठो संगदोउ भाईजी ॥
तुम जेवहु मैं लेहुँ बलाई कहति यशोमति माईजी ॥
सोकसिंधुबूडी नँदरानी तनुकी सुधि बुधि नाईजी ॥
श्याम श्याम कहि टेरति व्याकुल आवहु वेग कन्हाईजी॥ १ ॥
ब्रजयुवती सुनि वचन महरिके भरे प्रेम आधीराजी ॥
अकुलानी रोवत सबठाढी बढी कठिन उर पीराजी ॥
बरजति यशुदहि कहिकहि ग्वालिन नीके हैं बलबीराजी ॥
सुत वियोग विकराल मातके बहत दृगनते नीराजी ॥ २ ॥

दोहा–जब कछु तनु में सुधिभई, देखे लोग लुगाइ ॥
तब जानी हरि दहगिरे, पुत्र पुत्र करिधाइ ॥

चौबोला–पुत्र पुत्र करिधाइ युवति सब यशुदहि पकरतजाईजी॥
श्याम वियोग व्यथा तनु छाई व्याकुल हरिकी माईजी ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकारत मारत कर[1] उर[2] लाईजी ॥
अति व्याकुल यमुना तट जाई गिरी धरणि[3] मुरझाईजी ॥ १ ॥
मुर्छे परी तनु दशा बिसारी उर हरि मूर्ति समाईजी ॥
ब्रजबासी सब उठे पुकारी कहा करत जल माईजी ॥
संकटमें तुम लेत बचाई अबहूँ करहु सहाईजी ॥
मात पिता रोवत दुख पाई आवहु वेग कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा–आय गये बलराम तब, व्याकुल देखी माय ॥
नाक मूंद जल सींचकै, जननी टेर लगाय ॥

चौबोला–जननी टेर लगाय बारही बार कहतरी माईजी ॥
भयो चेत तब बलितन हेर्यो उर लाये सुख पाईजी ॥
कहत उठी बलरामसों जननी बनहिं तज्यो लघु भाईजी॥
श्याम तुमहिं बिन रहत नहीं क्षण तुमते क्यों रहो जाईजी॥१॥

---

१ हाथ। २ हृदय। ३ पृथ्वी।

कहति लेआवहु श्यामको जाई मगन सोच रस माईजी ॥
भूखेह्वैहैं ल्यावहुजाई आजगये नहिं खाईजी ॥
कबहुँ कहत बन गये कन्हाई कबहूँ कहत घर माईजी ॥
कित खेलत घर तनकि न आवत आवहु लाल कन्हाईजी ॥२॥
दोहा—मोहविकल जननी लखी, हलधर कहत सुनाय ॥
नीकेहैं हरि धीरधर, कतरोवत दुख पाय ॥
चौबोला—कतरोवत दुख पाय मात तू जिन मनमें भय ल्यावैजी॥
मंति डरपै अपने जिय माई हलधर बोध करावैजी ॥
तेरीसों मैं कहत पुकारी लहन मरनमैं आवैजी ॥
जिन काली भयहोत दुखारी ऐसे कहि समुझावैजी ॥ १ ॥
प्रथमाहिं बकी कपटकर आई तब हते बाल कन्हाईजी ॥
शकटा तृणावर्त पुनि आयो डारे तुरत नशाईजी ॥
वत्स बका अघ बनमें मारे विष जल लिये बचाईजी ॥
नाग नाथ ल्यावहिं अब नृपको देहैं कमल पठाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मोहिं दुहाई नन्दकी, अबहीं आवत श्याम ॥
नाग नाथ लैआवहीं, तौ कहियो बलराम ॥
चौबोला—तो कहियो बलराम सुने हलधरके बैन सिहाईजी ॥
जो कछुकरै सो होय हरी अब भयो चैन मन माईजी ॥
बांह पकरि बालिको बैठायो लैबलाय उर लाईजी ॥
अति कोमल तन धरे कन्हाई गये जहां अहिराईजी ॥ १ ॥
हरिको देखि उरगकी नारी निरखि रही मनलाईजी ॥
कहति कौन तू काको जायो आवत कत इत धाईजी ॥
बारहि बार कहति अकुलाई बेग भाग किन जाईजी ॥
देखै नाग जागके ज़बहीं होय भस्म क्षण माईजी ॥ २ ॥
दोहा—सुनत नाग नारी वचन, बोले त्रिभुवन राय ॥

पठियोहै मोहिं कंस नृप, तू यहि देहि जगाय ॥
चौबोला–तू यहि देहि जगाय सुनतही नागिन वचन सुनावैजी ॥
एक फूंकमें तू जरजैहै कहा यहि कंस बतावैजी ॥
अजहूं भाज कह्यो कर मेरो तेरो रूप सुहावैजी ॥
मरो कंस जिन तोहिं पठायो तू कत मरने आवैजी ॥ १ ॥
बालक जानि दया अति मेरे मात पितन दुख होईजी ॥
अरी बावरी याहि सर्पते कहा डरावत मोईजी ॥
जैसो मैं बालक तोहिं लागत अबहिं दिखाऊं तोईजी ॥
तू किन देहि जगाय याहि अब लियो बहुत दिन सोईजी ॥२॥
दोहा–देखों धौं याके बलहि, तू किन देहि जगाय ॥
ले जैहों इहि नाथ व्रज, यापर कमल लदाय ॥
चौबोला–यापर कमललदाय सुनतही अहिकी नारि रिसाईजी॥
छोटे वदन कहत बडिबानी काल निकट रह्यो आईजी ॥
खगपति सों सरवर इन ठानी तू नाथन कह पाईजी ॥
देखतही ह्वै है जरछारा तू बपुरो क्षण माईजी ॥ १ ॥
बपुरो मोहिं कहति अहिनारी कहत तोहिं समुझाईजी ॥
एकहिं लात खसम तुव मारों तू बपुरी ह्वै जाईजी ॥
सोवत काउ मारियेनाईं रीति सदा चलि आईजी ॥
देखौं मैं याकी मनसाई तू पति देहि जगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जो यह बूझी मरनकी, आय गई है तोहि ॥
तो तू लेत जगाय किन, कहा कहत है मोहिं ॥
चौबोला–कहा कहत है मोहिं सुनतही हरि इक बुद्धि उपाईजी
दाबी चरण पूंछ अहिकेरी उठ्यो उरग अकुलाईजी ॥
आयो गरुड़ जानि भय कीनो सन्मुख लखे कन्हाईजी ॥
अतिहि क्रोध करि गर्व बढायो झपट्यो हरितन धाईजी ॥ १ ॥

दाँव लात लाग्यो अहि करने सहसों फन फटकाराजी ॥
बारबार फुंकार करत अति डारत मुख विषभाराजी ॥
जात फेन उतरात विषहिते जरत यमुन जल साराजी ॥
अहिमद मोचन नाम श्यामको परसत नहिं विषझाराजी ॥२॥

दोहा–कियो युद्ध बहु उरग तब, मुरे न नेकहु कान्ह ॥
कहति परस्पर नागिनी, यह बालक बलवान ॥

चौबो०-यह बालक बलवान यमुन जल विषज्वाला जरयोजाईजी
याके अंग न परसत तनुको यह अचरजलखि पाईजी ॥
मंत्र यंत्र जानत कछु बालक विष लागतयाहिं नाईजी ॥
सहसों फनन करत अहिघाता बच्यो पुण्य पितु माईजी ॥१॥
तब अहिराज श्याम तन देख्यो इन मेरी पूंछ दबाईजी ॥
अतिहि क्रोध करि हरिके अंग सों लिपट्यो आतुर धाईजी ॥
कहत करी इन बहुत खुटाई नख शिख गयो लपटाईजी ॥
दियो दाव हरि अहिको जानी कौतुकनिधि सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तेहिं अवसर सुर सिद्ध मुनि, व्याकुल भये ब्रजआय॥
हरिको रूप निहार मन, उरग नारि पछिताय ॥

चौबोला–उरग नारि पछिताय कहति यह आयो गर्व बढ़ाईजी॥
काल विवस पग इतहि चलायो हरिगति जानि न जाईजी ॥
काली हरिके अंगलपटायो गर्व कियो मनमाईजी ॥
कहत मोहिं जानत नाहिं काहे मैं सर्पनको राईजी ॥ १ ॥
भंजन गर्व गोपाल अहीके गर्व वचन सुन पायाजी ॥
कीनो वपुष विसाल हरी तब विकल भयो अहिरायाजी ॥
जबहिं श्याम तनु अति विस्तारयो टूटत अंग अकुलायाजी ॥
शरण शरण प्रभु तुम नहिं जाने नाथ शरण मैं आयाजी॥ २ ॥

१ सर्प-काली। २ देवता। ३ देह।

दोहा–शरण आपनी राखिये, देहु जीव प्रभुदान ॥
दीन वचन अहिके सुने सकुच गये भगवान ॥
चौबोला–सकुच गये भगवान यहै वाणी गजराजसुनाईजी ॥
गरुड छांडि ताके हित धाये भक्तनके सुखदाईजी ॥
यहै वचन सुन द्रुपदसुताको दीनो बसनबढाईजी ॥
यहै वचन सुन लाक्षागृहते पांडवलिये बचाईजी ॥ १ ॥
यह वाणी सहि जात न श्यामहिं करुणासिंधु दयालाजी ॥
लीनो अंग सकोच देखअति व्याकुल अहि नँदलालाजी ॥
पगसों चापि नाक धर फोरी लइकर डोर गुपालाजी ॥
कूदचढे हरि ताके शीशा मन मन सोचत व्यालाजी ॥ २ ॥
दोहा–मैं यह विधि पै सुनि हती, ह्वै हैं ब्रज अवतार ॥
सोगोकुल हरि अवतरे, मैं जान्यों निरधार ॥
चौबोला–मैं जान्यों निरधार ब्रजहिंमैं लियो जन्मसुखकारीजी॥
वारवार पछितात कहत मन किये घातमैं भारीजी ॥
रह्यो दीन ह्वै सकुचि अहीमन स्तुति करन विचारीजी ॥
देख्यो व्याल विहाल कृपाला दियोदरश बनवारीजी ॥ १ ॥
देख दरश मन हरष वढायो तब बोल्यो अहिराईजी ॥
मैं अपराध कियो बिनजाने क्षमाकरो सुखदाईजी ॥
तामस योनि कीट विषसान्यों तुमगति जानि न जाईजी ॥
अबकीनो प्रभुमोहिं सनाथा दियोदरश निज आईजी ॥ २ ॥
दोहा–अशरणको तुम शरणहो, कहत वेद सब भाषि ॥
सब अपराध क्षमाकरो, लीजै शरणहिंराखि ॥
चौबोला–लीजै शरणहिंराखि आज प्रभु धनियह शीशहमाराजी
जापर चरण दिये तुमनाथा धनि मम भाग्य अपाराजी ॥
अब ये चरण परसि प्रभु तेरे मिटेदोष दुखसाराजी ॥

रहत रमाउर धारि प्रीतिकरि येपद कमल तुम्हाराजी ॥ १ ॥
शिव विरंचि सनकादिक ध्यावैं रटत समाधि लगाईजी ॥
जे पद कमल सलिल सुरसरिता तीनलोक सुखदाईजी ॥
तेनिजपद पंकज रजपरसित ऋषि पत्नी गति पाईजी ॥
सुर नर मुनि वंदित पद पावन संतरहत रट लाईजी ॥ २ ॥

दोहा—श्री वृन्दावन सो चरण, फिरत चरावत गाइ ॥
विहारन प्रभुजन दुख हरण, भक्तनकें सुखदाइ ॥

चौबोला—भक्तनके सुखदाइ जे पद पंकज परमसुहायाजी ॥
ते प्रभु आजुसुलभ करिपाये करी कृपा यदुरायाजी ॥
गरुड त्रासते इत भजिआयो भलि मोहिं गरुड सतायाजी ॥
जाते दरश भयो प्रभुतेरो सबभयतापनशायाजी ॥ १ ॥
गही नाथ मम प्रभुनिजहाथा आज सनाथ कहायोजी ॥
सुनत दीन काली की वाणी हरि मनमें सुख पायो जी ॥
फन प्रति चरण सरोज छुवाये सब संताप नशायोजी ॥
तब ब्रजनाथ भक्त हितकारी यह मनमाहिं उपायोजी ॥ २ ॥

दोहा—कमल भार यापैधरो, काली ब्रजहिंदिखाय ॥
ह्वै हैं ब्रजके जन दुखित, करों सुखी अबजाय ॥

चौबोला—करों सुखी अबजाय कंसको देवहुँ कमल पठाईजी ॥
काल्ह चढे गो ब्रजपर आई कहत मनहिं यदुराईजी ॥
लीने अहि पर कमल लदाई चले ब्रजहि सुखदाईजी ॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई फन पर कुँवर कन्हाईजी ॥१॥
उरग नारि कर जोर सकल मिल हरिके सन्मुख आईजी ॥
करत विनय अति दीन वचन ह्वै पतिहित हरिहि सुनाईजी ॥
उठी लहर अति मगन प्रेमकी इत यशुमति उरमाईजी ॥
कहति रोय बलराम सों जननी कान्हर आयोनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत राम तब मात सों, आवत अबहिं कन्हाय ॥
नेक धीरधर आत हरि, यह सुनि लईबलाय ॥
चौबोला–यह सुनि लई बलाय कहति पुनि मोहन आयोनाईजी
झूंठहि मोहिं प्रमोद करावत कहति यशोमति माईजी ॥
भई बिना सुत व्याकुल माई कहा मेरो लाल कन्हाईजी ॥
गिरीधरणि व्याकुल मुरझाई रोवति सखि समुंदाईजी ॥ १ ॥
कहत कहा मोहन नँदलाला ब्रजबासी अकुलाईजी ॥
तुम बिन यह गति भई हमारी आवहु धाय कन्हाईजी ॥
प्रातहिते जल माँझ समाने तुम बिन क्षण युग जाईजी ॥
धृक जीवन तुम बिन मन मोहन को बसिये ब्रज माईजी ॥ २ ॥
दोहा–व्याकुल रोवत नंदजी, मनु फणि मणी गमाइ ॥
यशुमति धावत परन जल, राखति सखि गहिवाइ ॥
चौबोला–राखति सखि गहिवाई हलधर कहत सबन समुझाईजी
बिना श्यामकोउ धीर न पावे व्याकुल लोग लुगाईजी ॥
कहत यशोमाति नंदाहि धृकधृक बारहि बार सुनाईजी ॥
और केतिक दिन जीवोगे अब मरो किन मोहिं नशाईजी ॥ १ ॥
ऐसे दुखमें मरन भलो है कर देखहु मन ज्ञानाजी ॥
मूर्छि परे सुनि तियकी बानी भये नंद बिन प्रानाजी ॥
तबहिं धाय बलि पिता जगायो समुझावत विधिनानाजी ॥
वृथा मरत काहे सब रोई मरत नहीं कहुँ कान्हाजी ॥ २ ॥
दोहा–ब्रजबासिन सों कहत बलि, राखहु दृढ विश्वास ॥
सदा करत अविगति पुरुष, रमा सहित जल बास ॥
चौबोला–रमा सहित जलबास करत हरि मानलेहु ममबानीजी
आवत श्याम धीर उरआनो सत्य लेहु तुम मानीजी ॥

१ अत्यानंद। २ सम्पूर्ण। ३ सर्प।

यमुनाके भीतर तिहिं काला उछल उठ्यो तब पानीजी ॥
बोले आतुर हो बलरामा वे आवत सुखदानीजी ॥ १ ॥
सुनत वचन लखि सब उठ आये यमुनाके तट धाईजी ॥
कोऊ जल कोउ बाहर ठाढे दरश आश मनमाईजी ॥
प्रगट भये जल ते तिहिं काला ब्रज जीवन सुखदाईजी ॥
कमल भार कालीपर लीने नटवर भेष बनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—भये सुखी ब्रज लोग सब, हरि मुख चंद निहारि ॥
निरखि श्यामको रूपवर, मगन सकल नरनारि ॥

चौबोला—मगन सकल नरनारि मनहुं सब बूडत नौकापाईजी
भयो जो सुख लखि मात पिताको सोकोउ सकहि न गाईजी ॥
गद्गद कंठ पुलक तनु हरषित रह्यो नैन जल छाईजी ॥
इकटक लखत चकित सब हरितन मिलन आश मन लाईजी॥१॥
निर्तत अहि फण प्रति मन मोहन चंदन खौर लगाईजी ॥
श्रवण कुंडल चपल लोचन मुकुट लटक छवि छाईजी ॥
पीत बसन कटि काछनि शोभित मोतिन माल सुहाईजी ॥
नृत्य तांडव करत फण प्रति दुंदुभी देव बजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—जै जै ध्वनि भई गगनते, सुरन सुमन बरसाय॥
गावत गुण गंधर्व गुनि, ताने ताल मिलाय ॥

चौबोला—ताने ताल मिलाय उरगकी नारिन स्तुति गाईजी ॥
नाथ अब अपराध क्षमिये दीजै पति सुखदाईजी ॥
राखे निज पद याके शीशा इने बडाई पाईजी ॥
ऐसी बड़ाई औरको प्रभु दई कबहुँ तुम नाईजी ॥ १ ॥
शेष इक ब्रह्मांड शिरधर मन अति गर्ब बढायोजी ॥
कोटि कोटि ब्रह्मांड़ तुम तन इन ये अधिक उठायोजी ॥
सुर असुर नर नाग खग मृग यह सब आप उपायोजी ॥

क्षमिये अब अपराध अहीके शरण तुम्हारी आयोजी ॥ २ ॥

दोहा—सुन अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय ॥
उतर परे अहि शीशते, यमुनाके तट आय ॥

यमुनाके तट आय श्यामको निरखत सब टकलाईजी ॥
कालीको आयसु हरिदीनी तटपर कमल धराईजी ॥
करहु बास निर्भय सदाई उरगद्वीप तुम जाईजी ॥
तब काली कहि सुनहु कृपाला तुमवाहन धरखाईजी ॥ १ ॥
धानि ऋषि शाप दियो है ताही आय सकत इहांनाईजी ॥
तब मैं भाजि बच्यो इत आई नातरलेतो खाईजी ॥
चरण चिह्नलखि तब फण मेरे परि हैं तव पद आईजी ॥
तूमति अब खगपति भयमाने करहुद्वीप सुखजाईजी ॥ २ ॥

दोहा—और बड़ो सुख कौन है, परस्यो पद सुखदाइ ॥
जे पद भजन प्रतापते, लियो प्रह्लाद बचाइ ॥

चौबोला—लियो प्रह्लाद बचाइ सोई पद चिह्न मेरे शिरमाईजी ॥
जन्मजन्मकोभयो सुखारी अंग अंग सुखपाईजी ॥
उर्गिन सहित नायपद माथा उरगद्वीपको जाईजी ॥
जै जै ध्वनि नभ सुरन बखानी धनि जनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
शरण राखि काली अहिलीनो जलते काढि पठायोजी ॥
कठिन गरुडकी त्रास मिटाई चरण चिह्न प्रगटायोजी ॥
धन्य धन्य प्रभु धन्यकही सुर मुदित सुमन झरलायोजी ॥
गये देव निज निज सदन सब हृदय परम सुखपायोजी ॥ ३॥

दोहा—सुरगण सुरलोकन गये, द्वीपपठायो व्याल ॥
विहारनहरि जनके सुखद, आयेनिकसिगोपाल ॥

चौबोला—आये निकसि गोपाल मिले सब धाय धाय उरलाईजी
विरहताप तनुकी सब नाशी निरखतही सुखदाईजी ॥

माता दौरि कंठ लपटाये गद्गद बैन सुनाईजी ॥
नैननीर अति प्रेम अधीरा उरलाये हरिमाईजी ॥ १ ॥
लेतबलाय दोउ करजननी कहि मेरे लाल कन्हाईजी ॥
गये प्राण मानहुँ फिर आये धाय मिले नँदराईजी ॥
नये जन्म आये मनमोहन कहत नंद पछिताईजी ॥
बार बार उरसों लपटायो जियकी ताप नशाईजी ॥ २ ॥

दोहा—मिले रोहिणी सों हरी, प्रेमाकुल लखिताहि ॥
निरखि वदन यशुमति कह्यो, बरजति मानत नाहिं ॥

चौबोला—बरजतिं मानत नाहिं लाल तुम यमुनातीर न जाईजी
तुम बरजे मानत नहिं काऊ करत सोई मन भाईजी ॥
मैंनिश सपने मांझ डरायो सोई प्रगट भयो आईजी ॥
कंस कमलके फूल मँगाये दिये ब्रजलोग डराईजी ॥ १ ॥
आयो यमुना तीर खेलत इहां संग गोपके बालाजी ॥
डारि दियो काऊ दह माई देखतही सब ग्वालाजी ॥
जाय तहां डरप्योमैं भारी देख्यो अहि विकरालाजी ॥
किन पठयो तोको किहिं काजै पूछो मोहिं तिहि व्यालाजी॥२॥

दोहा—कमल काज आयो इहां, पठयो मोहिं नृपराइ ॥
तब मैं यह अहि सों कह्यो, सुनतहि उठ्योरिसाइ ॥

चौबो०-सुनतहि उठ्योरिसाइ लियो मोहिं फनपर तुरत चढ़ाईजी
कमल लिये निज पीठलदाई आप गयो पहुँचाईजी ॥
ऐसे जननी बोध करायो सुनत सकल सुख पाईजी ॥
लैलै हरिको उरसों लायो बिरहकी शूल मिटाईजी ॥ १ ॥
श्याम बिना बहु तै दुख पायो सो सब ताप नशाईजी ॥
लखे सखा सब आरत बाढे मिलन चहत मनमाईजी ॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई मिले सब कंठ लगाईजी ॥

कहत सखा धनि धन्य कन्हाई कहि सोइ करी तुम भाईजी॥२॥
दोहा–हौ तुम सब ब्रजके सुखद, हति हौ कंस लइजान॥
कहा भयो जो बालहो, हो तुम अति बलवान॥
चौबोला-हो तुम अति बलवान छोटो भलो यदपि सिंहको जाईजी
कहा काज गजराजहिं मोटो नाहक देह बढाईजी॥
तुमहिं गये हमपर रिस करि हरि सो सब देहु भुलाईजी॥
सुनतहि वचन श्याम हँसि दीने मिले बहुरि हरषाईजी॥ १॥
मिले विहँसि दोऊ मनमांई हलधर कुँवर कन्हाईजी॥
भेद नहीं जानत यह कोऊ निरखत लोग लुगाईजी॥
धनि बलराम कही तुम सोई करी श्याम सुखदाईजी॥
कहत नंद सों कुँवर कन्हाई मेरे मन यह आईजी॥ २॥
दोहा–आज बसैं सब यमुन तट, अति रमणीक सुहाइ॥
यहांकीजिये आज सुख, प्रात होत घर जाइ॥
चौबोला–प्रात होत घर जाइ कंसको दीजे कमल पठाईजी॥
सुनहु तात अब विलम न कीजे दीजे शकटसजाईजी॥
गोप जाय पहुँचावहु नाहीं चढि हैं ब्रजपर आईजी॥
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो ब्रज बासिन मनभाईजी॥
तुरत ग्वाल बहु घरहि पठाये भोजन लिये मँगाईजी॥
भोजन कियो बहुतसुख पाई यमुना तट समुदाईजी॥
नंदराय तब शकट मँगाये दीने कमल लदाईजी॥
बहुत भाँर दधि घृतके अहिरन काँवरलई सजाईजी॥ २॥
दोहा–अपनी सर जे गोपहौ, ताहि कह्यो समुझाय॥
तिनहिं संग करिनृपति ढिंग, पठादियो नँदराय॥
चौबोला–पठादियो नंदराय कंसको दीनो पत्र लिखाईजी॥

१ ऐरावत हाथी। २ सुंदर। ३ किनारा। ४ कांवरि।

कहियो मेरी ओर ते बहु विधि नृपसों ऐसे जाईजी ॥
गयो कमलके काज कालीदह मेरो कुँवर कन्हाईजी ॥
तुम परतापते राजन काली आप गयो पहुँचाईजी ॥ १ ॥
कोटि कमल नृप माँग पठाये तीनकोटि धरेल्याईजी ॥
आयसु होय तो देहुँ पठाई राखे जलहि सजाईजी ॥
तब गोपन सों कुँवर कन्हाई बोलउठे मुसकाईजी ॥
नृपसों लीजो नामहमारो कियो काज मैं जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कमल शकट दधि घृतलिये, चले गोप सबजाय ॥
नृपति पौरि पहुँचाय तब, दीनी खबर जनाय ॥

दीनी खबर जनाय पौरिया तुरतहि भीतर धायोजी ॥
समाचार सब नृपहि सुनाये सुनत कंस भय पायोजी ॥
सुनत बात यह मनहिं डरायो आतुर तहां चल आयोजी ॥
देखे शकट भीर अतिभारी सुधबुध सबहि भुलायोजी ॥ १ ॥
कमल देख नृप अतिहि डरायो लगे व्याल मनु आईजी ॥
नंद विनय सब गोपन भाषी पत्र दियो नँदराईजी ॥
गोपन कह्यो बहुरि नृपराई यह कह्यो कुँवर कन्हाईजी ॥
कियो राजको काज हमहिं यह कालीदहमें जाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥
दीने कमल पठाय अब, और कहो कछु काम ॥

चौबोला–और कहो कछु काम गोप तब हरि संदेश सुनायोजी॥
भीतर गयो नरेश मनहिंमन अतिशय सोच बढायोजी ॥
मनहीं मन यह करत विचारा यासों नाहिं बसायोजी ॥
दैत्य गयेते सबहि नशाये कालीते बचि आयोजी ॥ १ ॥
ताहीपर लिये कमल लदाई दीने शकट पठाईजी ॥
कबहुँ कहत गोपनको मारो यह मनमाहिं उपाईजी ॥

फेर कछुक मनमाहिं विचारत करत न कछु बनिआईजी ॥
पुनि संभारि धीरज उरकीनो लीनो गोप बुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हृदय दुखित ऊपर सुखी, दीने तब पहिराय ॥
सिरोपाव नँदको दियो, कहियो नँदसोंजाय ॥
चौबोला—कहियो नँदसो जाय तेरे सुत दोउ बलराम कन्हाईजी
एक दिवस देखिहौं बुलाई कह्यो कंस नृपराईजी ॥
यह कहि बिदा किये सब ग्वाला लीने कमल रखाईजी ॥
रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन मनहीं मन पछिताईजी ॥ १ ॥
तब दावानल बोल पठायो कह्यो ताहि समुझाईजी ॥
देखौं मैं तेरे बलहीको जातू ब्रजके माईजी ॥
जार कीजियो छार ब्रजहि सब ब्रजबासी समुदाईजी ॥
बचहिं न नंद कुमार वे दोऊ कीजो काज बनाईजी ॥ २ ॥

अथ दावानल पानलीला ॥

दोहा—दावानल चल्यो गर्व करि, नृपकी आयसुमान ॥
करों भस्म क्षण एकमें, सहित गोप नँदकान्ह ॥
चौबोला—सहित गोपनँद कान्ह नृपतिको आज काजकरोंजाईजी
जे कहुँ एक ठौर सब पावें वचन नं कोऊ पाईजी ॥
इहां गोप यमुना तट आये नृपाहिं कमल पहुँचाईजी ॥
नंद तुरत सब निकट बुलाये सुनतहि आये धाईजी ॥ १ ॥
गोपन कही नंदसों आई लियें नृप कमल रखाईजी ॥
दियो हर्षि तुमको पहरायो लियो नँदशीश चढाईजी ॥
अपने सब पहराव दिखाये लखे नंद सुख पाईजी ॥
हरिको नाम सुन्यो नृपराई कीनो काज कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—इकदिन बल मोहन दोऊ, देखहुँ यहां बुलाय ॥
मम सुतबुलवत कंसनृप, सुनि हरषे नँदराय ॥

चौबोला–सुनि हरषे नँदराय बुलैहैं नृप बलराम कन्हाईजी ॥
सब नर नारि हर्षि मन माई कहि कहि बात सिहाईजी ॥
हँसि हँसिकै यह बात रामसों कहत श्याम सुखदाईजी ॥
नृप हम तुम देखनकेकाजे कह्यो बुलावन भाईजी ॥ १ ॥
इक सुख हरि अहिते बचि आये ब्रजजन परमहुलासाजी ॥
द्वितिये कमल पठाये नृपको मिटी कंसकी त्रासाजी ॥
यहि विधि ब्रजजन अति सुखपायो खान पान सुखरासाजी ॥
सोये निशि सब यमुनातीरा हृदय राखि हरि आसाजी ॥ २ ॥

दोहा–दावानल आयो असुर, चाहत ब्रजहि जराय ॥
देखे सब इकठोरही, मनअति हरषबढाय ॥

चौबोला–मन अति हरषबढाय चहूँ दिश दावानल प्रगटाईजी ॥
अतिहि प्रचंड पवन झकझोरी जरत चहूं दिश आईजी ॥
दशहुँ दिशाते घेरत आवै खग मृग जीवजराईजी ॥
जागपरे सब ब्रज नर नारी कवन दिवारी लाईजी ॥ १ ॥
भये चकित सब अतिहि डराये दीसत मग कहुँ नाईजी ॥
चहत चलन भजिनाहिं निकासू सोच रहे समुदाईजी ॥
आयगईदौं अतिहि निकट अब चलो यमुनतट जाईजी ॥
अब न देखियतकहूँ उबारा अनल चहूँ दिश छाईजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रजकेलोग डरे अतिः, व्याकुल सब अकुलाय ॥
जरे सकल यह मन कहत, दीसत नाहिं उपाय ॥

चौबोला–दीसत नाहिं उपाय देखि सब अतिशयरहे डराईजी॥
भईधरणि नभज्वाला पूरण धुंधचहूँ दिश छाईजी ॥
लपटत झपटत जरत तरूतर गिरत सकल महिपाईजी ॥
उठत शब्द आघातचहूँ दिश बढत झरत झहराईजी ॥ १ ॥
फटत फूलफल परत रलत सब जरतलता झहराईजी ॥

काँस चटकत बाँस फटकत ज्वाला नभतन जाईजी ॥
हिरण मोर बराह बन पशु विकल पंथ ना पाईजी ॥
जरत जहां तहां जीव खग सब व्याकुल जिततित धाईजी ॥२॥

दोहा–दावानल अति क्रोधकर, लियोदशहुँ दिशघेर ॥
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर ॥

चौबोला–मानहुँ अचल सुमेर धूम सब गगनअंधेरी छाईजी ॥
तडितमाल जनु सघन घनीअति बिच बिच ज्वाल लखाईजी ॥
भये देखि ब्रजलोग दुखारे आये हरि शरणाईजी ॥
जरत सकल ब्रजलेहु बचाई करहू श्याम सहाईजी ॥ १ ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे कंसकि त्रास मिटाईजी ॥
जहांजहां गाढ परी अति आई तहां तहां करी सहाईजी ॥
अब हरि यत्नकछू सो कीजै लीजे हमहिं बचाईजी ॥
व्याकुल नंद गोप मनमाहीं करत न कछु बन आईजी ॥ २ ॥

दोहा–कहत यशोमति सबनसों, दईपरयो है ख्याल ॥
नानारूप बनायके, आये असुर कराल ॥

चौबोला–आये असुर कराल कोऊ खग कोऊ पशुबने आईजी ॥
कोऊ पवन रूप ह्वै आयो भयो कोउ पुण्य सहाईजी ॥
आज उरगते बच्यो कन्हाई नृपकी त्रास नशाईजी ॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा को अब लेत बचाईजी ॥ १ ॥
मोहिंलखि परत उबार न कोऊ बचहिं किमिहिं दोउ लालाजी ॥
सुनि जननीके वचन कृपाला लखि ब्रजके सब हालाजी ॥
कह्यो हरी सबधीरजधारो मति डरपो लखि ज्वालाजी ॥
हरिके चरित कहा कोउ जाने कौतुकनिधि गोपालाजी ॥ २ ॥

दोहा–दुख सुख जिनको ख्यालहै, भक्तनको सुखदाय ॥
तब हरि कह्यो डरो मति, सब मिल देव मनाय ॥

चौबोला–सब मिल देव मनाय जिनाहिंने सहाय करी अब तांईजी
सोई करिहै सहाय सदाई हरि हँसि आंख मुँदाईजी ॥
करि गये अग्नि पान मुख माई ह्वैगइ शीतलताईजी ॥
रह्यो न अग्नि लेस कहुँ राई तब हरि आंख खुलाईजी ॥ १ ॥
सुनतहि तुरत सबन दृग खोले देखत गोपी ग्वालैजी ॥
देखि चकित सब ब्रजनर नारी कहत धन्य नँदलालैजी ॥
धरणि अकास बराबर ज्वाला लपट झपट विकरालैजी ॥
नहिं बरण्यो नहिं सीचो जाई कहां गई दौंहालैजी ॥ २ ॥

दोहा–हम काऊ जानी नहीं, कैसे अग्नि बुझाइ ॥
खूब मनोहर कमल मुख, तब हँसि कह्यो कन्हाइ ॥

चौ०-तब हँसि कह्यो कन्हाइ तृणहिकी प्रथम आग उठे ज्वालाजी
फिर तिहि बुझत बिलंब न लागत सुनत सुखित भये ग्वालाजी॥
जीव जंतु खग मृगहि जिवाये भये सुखित ततकालाजी ॥
द्रुम[1] बेली तृण हरित भये सब प्रफुलित वन भयो हालाजी॥१॥
ताहि कहो डर कौनको होई श्याम करतहैं सहाईजी ॥
पांच[2] तत्त्व उनहींके कीने यह न बड़ाई ताईजी ॥
कहति परस्पर[3] ब्रजकी नारी है बडो वीर कन्हाईजी ॥
यह सखि जांनतहै कछु टोनो दीसत अति सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नाथ्यो नाग पतालमें, ल्यायो कमल लदाय ॥
नृपति कंस मांगे कमल, दीने ताहि पठाय ॥

चौबोला–दीने ताहि पठाय दावानल घेरलई ब्रज सारीजी ॥
नैन मुँदाय कहाधौं कीन्हो रही न तनक अँगारीजी ॥
येउतपात मिटैं उनहींपै और कौन सों टारीजी ॥
यह कोउ सखी बड़ो अवतारीहै यह जग करतारीजी ॥ १ ॥

१ वृक्ष । २ पृथ्वी, नभ, तेज, पवन, पानी । ३ आपसमें ।

लखि हरिचरित यशोमति माई दोउ कर लेत बलाईजी ॥
निरखत मुदित[1] महर नँदराई रहे गोप सुख पाईजी ॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा[2] ब्रजजन भाग्य बड़ाईजी ॥
जिनके संग नित नवरस लीला करत श्याम सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—एक दिवस निशि यमुन तट, बस सब गोपी ग्वाल ॥
होत प्रात निज निज सदन, आये सहित गुपाल ॥

चौबोला—आये सहित गोपाल हरी सब ब्रजजनके सुखदाईजी ॥
विलसत विविध बिलास ब्रजहिमें बलि अरु कुँवर कन्हाईजी ॥
संतन प्राण अधार श्यामपर बिहारन बलि बलि जाईजी ॥
हरि ब्रजजनके दुख बिसरावत करत सबन मन भाईजी ॥ १ ॥
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये कब नृप कमल मँगायेजी ॥
कब हरि यमुना जलहि समाये नाग नाथ कब ल्यायेजी ॥
कब दावानल जारन आयो निशि दिन कहां बितायेजी ॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा बालचरित मन भायेजी ॥ २ ॥

दोहा—माखन मांगत मात सों, सुन्दर श्याम सुजान ॥
नँदरानी आतुर मथत, सद माखन रुचिमान॥

चौबोला—सदमाखन रुचिमान जाउँ बल भूख लगी तुम भारीजी
बातन लावत सुतहिं दुलारी सुनत बात बनवारीजी ॥
झूंठहिं देत हुँकारी जननी भूल रही सुधसारीजी ॥
तबलौं मथि दधि माखन कीनो दियो सुतहि महतारीजी ॥१॥
माखन रोटी खात कन्हाई अपने कर सुखकारीजी ॥
करत प्रशंसा मधुर सुनत तब प्रफुल्लित अति महतारीजी ॥
दुर्लभ शिव सनकादि मुनी सुर सो प्रभु अलख[3] अपारीजी ॥
ताको सुतकर मानति यशुमति धन्य नंदकी नारीजी ॥ २ ॥

१ प्रसन्न। २ स्नेह। ३ जो देखनेमें न आवे।

अथ प्रलम्वासुरवध लीला ॥

दोहा–नितनव लीला करत हरि, तात मात सुखदाय ॥
निरखत हरिको चंद्र मुख, नर नारी सुखपाय ॥
चौबोला–नरनारी सुखपाय एकदिन श्याम राम दोउ भाईजी ॥
खेलत सखन संग बनजाई ग्वाल बाल समुदाईजी ॥
नाना विधि सब करत किलोलैं वाणी विविध सुनाईजी ॥
कबहूं मोर हंसकीनांई बोलत हरि सुखदाईजी ॥ १ ॥
कबहुँक मधुरे सुर कछु गावें हरि मुख वेणु बजाईजी ॥
कबहूं चढत द्रुमनपर धाई कूदत डार नवाईजी ॥
नाना विधिके खेलन खेलैं बाल विनोद सुहाईजी ॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो दीनों कंस पठाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कपट रूप धारि गोपतन, मिल्यो सखनमधि आय ॥
ग्वालन काउ न जानियो, चीन लियो हरिताय ॥
चौबोला-चीन लियो हरिताय बलहिको दियो जनाय गुपालाजी
ताय हतनको रच्यो उपाई सखन खिलावत ख्यालाजी ॥
सखा बुलाये निकट सबहिं हरि तिन्हैं कह्यो नँदलालाजी ॥
फल बुझाय अब खेलिये भाई भये मुदित सुनि ग्वालाजी ॥१॥
सखा लिये सब बांट हरीने द्वै बालक कर राईजी ॥
आधे एक दिशाभये ठाढे आधे एक दिशाईजी ॥
निज निज जोटिजुरे सब हलधर दनुज जोटिजुरे आईजी ॥
हारे सोले पीठ चढाई ऐसे होड लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भांडीर बन जाय तब, फिर ल्यावे यहिठाम ॥
फलको नाम बुझन लगे, बूझ दियो बलराम ॥
चौबोला–बूझ दियो बलराम सखा सब निजनिज जोटचढाईजी
चढे दनुज बल घींच मरोरी चले बनहिं समुहाईजी ॥

भांडीर बन पहुँचे जाई फिरे सब ठाम छुवाईजी ॥
असुर चल्यो ले बलिको आगे देह दनुज प्रगटाईजी ॥ १ ॥
जब बलराम मुष्टि इक मारी बिकस्यो शिर तिहिं ठाईजी ॥
उतर परे तब श्रीबलवीरा देखत सुर समुदाईजी ॥
भई गगनते जैजै बाणी फूलन झरी लगाईजी ॥
मुदित सकल सुर मुनि मनमांई स्तुति बलहिं सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—ग्वाल बाल चकृत सबै, दौरि गये बलपास ॥
मृतक असुर तनु देखिकै, अतिमन कियो हुलास ॥

चौ०—अतिमन कियो हुलास कहत धनिधनि बलराम कन्हाईजी
धन्य तुम्हारे मात पितनको जिन जाये दोउ भाईजी ॥
बड़ो काम तुम कियो कपटतनु मारचो असुर अन्याईजी ॥
यह शठगोप भेसबन आयो हमकाउ जान्यो नाईजी ॥ १ ॥
जो ये शठ कहुँ मारचो न जातो लरिकन लेतो खाईजी ॥
हौ तुम बडे बीर दोउ भ्राता जहां तहां होत सहाईजी ॥
बनके दुष्ट सकल तुम मारे हौ हमको सुखदाईजी ॥
जासु भीत बलराम कन्हाई ताहि कहा डरभाईजी ॥ २ ॥

दोहा—देत बड़ाई बलहिको, ग्वाल बाल समुदाय ॥
आय मिले तहां श्याम तब, देखत हँसे कन्हाय ॥

चौबोला—देखत हँसे कन्हाय दुष्टदल राम श्याम सुख दाईजी
सखन सहित बल मोहन लाला घर आये दोउ भाईजी ॥
ग्वालन कही आय सब बाता सुनि ब्रज जन हरषाईजी ॥
करत सकल बलराम बड़ाई लिये मात उरलाईजी ॥ १ ॥
बलिमोहन दोउ बीर निहारी दोउ जननी बलि जाईजी ॥
भूखे जानि बनहिंते आये भोजन दिये जिमाईजी ॥
सुत सनेह अति मगन यशोमति निशि दिन जानति नाईजी ॥

जो सुख लहत नंद घरनी सो शारद सकहि न गाईजी ॥ २ ॥

अथ पनघट लीला ॥

दोहा–ब्रजजन हरि सँग सुखलहत, निशि दिन परमहुलास॥
बाट घाट गृह बन सघन, विलसत विविध विलास ॥

चौबोला–विलसत विविध विलास पनघट यमुनातीर कन्हाईजी
ठाढे श्याम कदमकी छाई गोप बाल समुदाईजी ॥
सखा वृन्द चहुँ ओर विराजत कोटि काम बलिजाईजी ॥
सुरंग खोर केसर छविछाई मुकुटकी लटक सुहाईजी ॥ १ ॥
कुंडल झलक अलक घुंघरारी कंठी कंठ सुहाईजी ॥
चटकीली लटकी वनमाला सो मन लेत चुराईजी ॥
मुक्तमाल मणि माल सुहाई उर विसाल परछाईजी ॥
मुर मुसकान मोहनी जियकी अधर अरुणता आईजी ॥ २ ॥

दोहा–चटकीलोकटि पीतपट, छुद्र घंटिका सोय ॥
भुज विसाल भूषण छये, करचूरा शुभदोय ॥

चौबोला–करचूरा शुभदोय तनघन सुन्दर श्याम सुहायेजी ॥
हँसि हँसि कहत सखन सों बैना सुनत ग्वाल सुखपायेजी ॥
भूषण सहित चरण अति सुन्दर कनकलकुट लपटायेजी ॥
गहि द्रुमडारी तिरछे ठाढे अंग अनूप बनायेजी ॥ १ ॥
कबहुँ बजावत अधरन पर धर कर मुरली धुनिघोराजी ॥
निकट बुलावत बनमृगनको कबहुँ नचावत मोराजी ॥
रहे गगन घन छाय सुखद सब अति शीतल चहुँ वोराजी ॥
बर्षाऋतुको पाय मगन मन निरखत नंद किशोराजी ॥ २ ॥

दोहा–हरित भूमि चहुँ ओर शुभ, मनहुँ मसन्द बिछाइ ॥
वहत समीर सुधीर अति, शीतल सुगँध सुहाइ ॥

चौ०—शीतल सुगंध सुहाइ वहत जल यमुना अति छविछाईजी॥
परत भँवर जहँ तहँ अतिरूरी निरखत कुँवर कन्हाईजी॥
या छवि सों पनघट हरि ठाढे संग ग्वाल समुदाईजी॥
यमुना जलतिय भरन न जाई भीर देखि सकुचाईजी॥ १॥
हरिके गुण मनमें सब जानत रोकतहै मगमाईजी॥
ताते जाय सकत कोउ नाई दरश आशमनं माईजी॥
सबके अंतर्यामि कन्हाई उनके मनकी पाईजी॥
तब इक बुद्धिरची नँदलाला रसिक शिरोमणि राईजी॥ २॥

दोहा—सखा बिठाये तरुन तर, दीनी भीर मिटाय॥
आप रहे द्रुम ओट छिप, युवतिन नाहिं लखाय॥

चौ०—युवतिन नाहिं लखाय आवत इक युवती श्याम लखाईजी
आप रहे द्रुम ओट छिपाई सो यमुना तट आईजी॥
नागरि तब जल भरयो हिलोरी धरिशिर घरहि सिधाईजी॥
पाछे ते चित चोर कन्हाई गागरि दई ढुराईजी॥ १॥
गही चतुर ग्वालिन भुज हरिकी कनकलकुटगहि पाईजी॥
सबसों तुम करि रहे ढिठाई तैसेइ मोहिं लगाईजी॥
देनलगे तब हरि हँसि गागरि लेति ग्वालि सो नाईजी॥
जल भर देहु लकुट जब देहों रीती लेहों नाईजी॥ २॥

दोहा—कहा जो तुम नँद सुवन हो, सुनहू कुँवर कन्हाइ॥
हमहुँ सुता बड़े गोपकी, तुमते नाहिं डराइ॥

चौबोला—तुमते नाहिं डराइ एकही गांव बास बनवारीजी॥
मैं नहिं सहिहौं कही तुम्हारी औरनसी नहिं नारीजी॥
एक कहो तो दश मैं कहिहों मैं नहिं डरपन हारीजी॥
यह सुनि हँसिदीने नँदलाला चोरयो चित हितकारीजी॥ १॥
कहत लकुटिया देरी मेरी मैं भरदेहों पानीजी॥

देखत रूप सुनत मृदुबानी ग्वालिन सुरत भुलानीजी ॥
लागी हृदय मदनकी सांटी प्रेम मगन मगनानीजी ॥
करते लकुट गिरत नहिं जानी सब चित चेत हिरानीजी ॥२॥

दोहा—तब घट भरि हरि भावते, दीनो शीश उठाय ॥
नेकहु सुधितातन नहीं, चली ब्रजहि समुहाय ॥

चौबोला—चली ब्रजहि समुहाय कियो दृग बासश्याम सुखदाईजी
जित देखे तितही घनश्यामा पंथहु दीसत नाईजी ॥
उतते आय कहति इक ग्वाली कहा तू रही भुलाईजी ॥
सूधे पंथ चलत है नाई कहा सोच मन माईजी ॥ १ ॥
अबहीं हँसति भरन जल आई कहा तू चली गँमाईजी ॥
तासों कहति देखि सुनि आली श्याम मोहनी लाईजी ॥
मैं जल भरन अकेली आई गागरि कृष्ण ढुराईजी ॥
तब मैं कनकलकुटगहि लीनी वे चितये मुसकाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वहै हँसनि मोमन बसी, सुधि बुधि गई भुलाय ॥
कहा कहों तोसों सखी, हरि मनरह्यो समाय ॥

चौबोला—हरि मनरह्यो समाय साँवरो बस्यो दृगनके माईजी ॥
और कछू मोहिं दीसतनाहीं रोम रोम रह्यो छाईजी ॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी आप विलोकन चाईजी ॥
ताहिबांहगहि घर पहुँचाई आप भरन जल आईजी ॥ १ ॥
देख्यो जाय श्याम तहां नाई सोच रही मनमाईजी ॥
हरि देखत तरु ओट छिपाने ग्वालनिमन दुख पाईजी ॥
चलीनीर भरिगागरि शिरधरि बारबार पछिताईजी ॥
कहति मनहिं मन हरि नाहिं देखे चली विचारति जाईजी॥ २ ॥

दोहा—देखि ग्वालनी विकल अति, मनके जाननहार ॥
आय अचानक निकटही, प्रगटे नंदकुमार ॥